SAMPLE CONTENT

CBSE PERFECT PREP

हिंदी 'ब'

स्पर्श व संचयन भाग २

POEMS EXPLAINED VIA VIDEOS

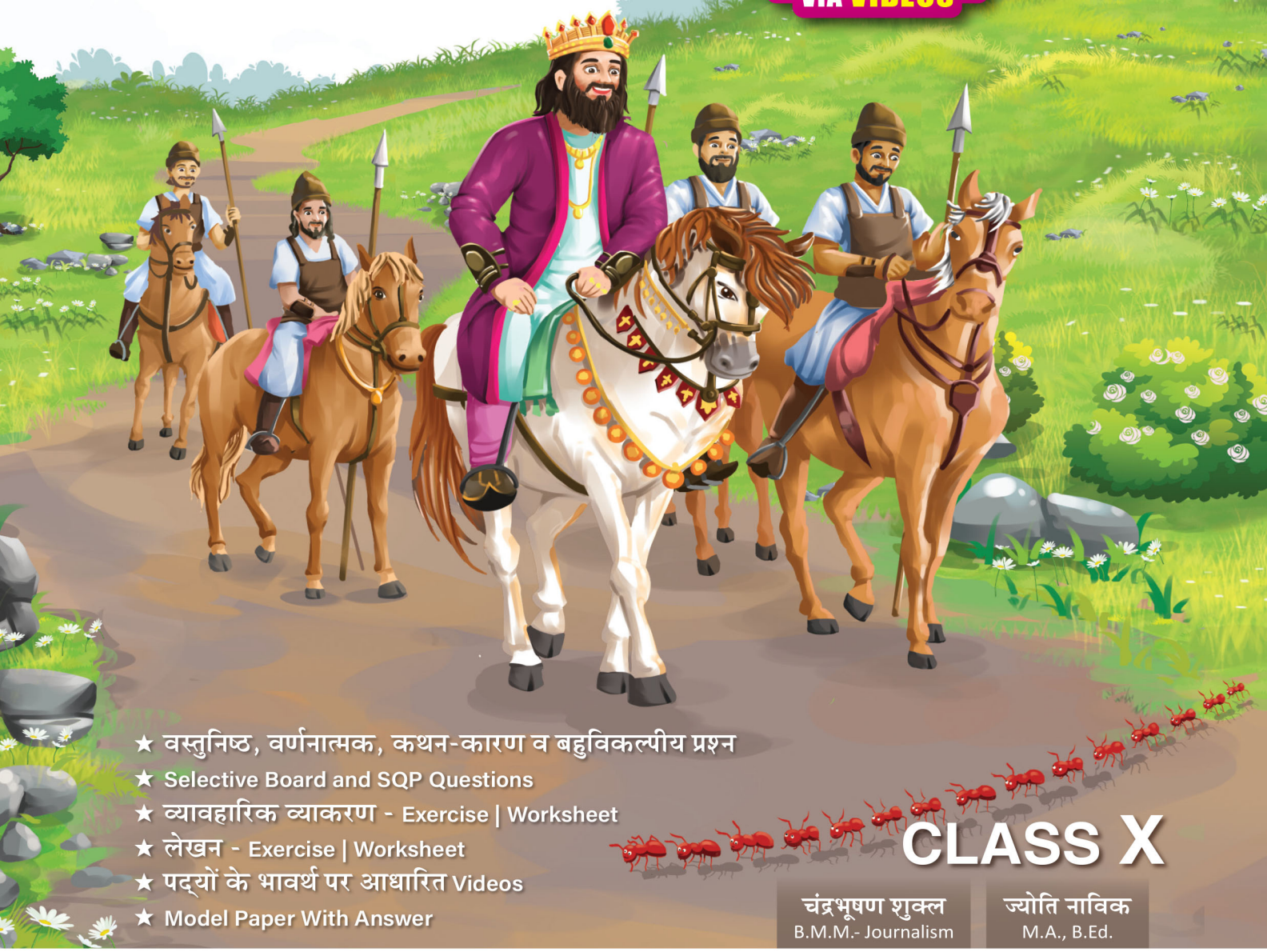

★ वस्तुनिष्ठ, वर्णनात्मक, कथन-कारण व बहुविकल्पीय प्रश्न
★ Selective Board and SQP Questions
★ व्यावहारिक व्याकरण - Exercise | Worksheet
★ लेखन - Exercise | Worksheet
★ पद्यों के भावर्थ पर आधारित Videos
★ Model Paper With Answer

CLASS X

चंद्रभूषण शुक्ल
B.M.M.- Journalism

ज्योति नाविक
M.A., B.Ed.

Target Publications® Pvt. Ltd.

Written as per the latest board pattern prescribed by the Central Board of Secondary Education (CBSE).

CBSE PERFECT PREP

हिंदी 'ब' स्पर्श व संचयन भाग 2

CLASS X

विशेषताएँ

- Latest Paper Pattern पर आधारित
- स्पर्श व संचयन भाग 2 के सभी पाठ Self Assessment सहित
- वर्णनात्मक, वस्तुनिष्ठ, कथन-कारण व बहुविकल्पीय प्रश्न
- वर्ष 2023 तक के चुनिंदा Board और SQP के प्रश्नों का समावेश
- पाठों को समझने हेतु Memory Map
- व्यावहारिक व्याकरण व उस पर आधारित Exercise and Worksheet
- लेखन व उस पर आधारित Exercise and Worksheet
- Q. R. Code के माध्यम से कविताओं के सरल भावार्थ के Videos
- त्रुटियों से बचने व ज्ञानवर्धन हेतु क्रमश: 'Caution' और 'Enrich Your Knowledge'

Scan the given **Q.R. code** in *Quill - The Padhai App* to view the Model Question Paper along with the Answer Key.

Scan the given **Q.R. code** in *Quill - The Padhai App* to view Course Structure.

Printed at: **Print to Print,** Mumbai

© *Target Publications Pvt. Ltd.*
No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, C.D. ROM/Audio Video Cassettes or electronic, mechanical including photocopying; recording or by any information storage and retrieval system without permission in writing from the Publisher.

P.O. No. 10598

TEID: 3278

Sample Content

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो!

हम सहृदय दसवीं कक्षा में आपका स्वागत करते हैं। शैक्षणिक यात्रा के इस पड़ाव पर मानसिक चिंता व चिंतन दोनों का बढ़ना स्वाभाविक है। सरल व समुचित तरीके से पाठ्यक्रम को समझना और उसका अभ्यास करना यह विद्यार्थियों के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होता है। ऐसे में उचित मार्गदर्शन बहुत आवश्यक हो जाता है, विशेषकर हिंदी भाषा के लिए। अत: **CBSE** के **Latest Paper Pattern** को आधार बनाकर **टार्गेट पब्लिकेशंस** द्वारा **CBSE Perfect Prep हिंदी 'ब' स्पर्श व संचयन भाग 2 : Class X** का निर्माण किया गया है। यह पुस्तक पाठ्यक्रम को सुगम एवं रुचिकर बनाने के साथ ही विद्यार्थी एवं पाठ्यक्रम के बीच सेतु का कार्य करेगी।

विद्यार्थियों में भाषिक क्षमता प्रबल करने एवं लेखन में उन्हें दक्ष बनाने के साथ ही उनकी कल्पनात्मक व वैचारिक शक्ति को और अधिक विकसित करने में यह पुस्तक महती भूमिका निभाएगी। पुस्तक की विविध विशेषताओं की विवेचना आगे के पृष्ठ पर विस्तारपूर्वक की गई है। हमें आशा व विश्वास है कि 'गागर में सागर' यह पुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और विद्यार्थियों का सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी।

उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएँ!

प्रकाशक

संस्करण : पहला

Sample Content

Disclaimer

This reference book is transformative work based on पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग 2 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग 2 for class X, Rationalised 2023-24 published by the National Council of Educational Research and Training (NCERT). We, the publishers, are making this reference book which constitutes as fair use of textual contents which are transformed by adding and elaborating, with a view to simplify the same to enable the students to understand, memorize and reproduce the same in examinations.

This work is purely inspired upon the course work as prescribed by the National Council of Educational Research and Training (NCERT). Every care has been taken in the publication of this reference book by the Authors while creating the contents. The Authors and the Publishers shall not be responsible for any loss or damages caused to any person on account of errors or omissions which might have crept in or disagreement of any third party on the point of view expressed in the reference book.

© reserved with the Publisher for all the contents created by our Authors.

No copyright is claimed in the textual contents which are presented as part of fair dealing with a view to provide best supplementary study material for the benefit of students.

KEY FEATURES

अपठित गद्यांश

संपूर्ण अभ्यास हेतु अधिकाधिक अपठित गद्यांशों का समावेश किया गया है।

व्यावहारिक व्याकरण

इस विभाग में पदबंध, रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण, समास व मुहावरे का विस्तारित वर्णन करने के साथ ही पूर्ण तैयारी हेतु उस पर आधारित **Exercise and Worksheet** का उत्तर सहित समावेश किया गया है।

शब्दार्थ Glossary

पाठ में आए कठिन शब्दों के सरल हिंदी व अंग्रेजी अर्थ दिए गए हैं।

टिप्पणियाँ

विद्यार्थियों के उचित मार्गदर्शन व पाठ को सरलता से समझने हेतु आवश्यकतानुसार टिप्पणियाँ दी गई हैं।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

पाठ्यपुस्तक स्पर्श व संचयन भाग 2 में पूछे गए सभी प्रश्नों के साथ ही भाषा अध्ययन, योग्यता विस्तार, परियोजना कार्य आदि के आवश्यकतानुसार सरल व सटीक उत्तर दिए गए हैं।

विविध प्रकार के प्रश्न

विद्यार्थियों की संपूर्ण तैयारी हेतु गद्य व पद्य पर आधारित वस्तुनिष्ठ, कथन-कारण, बहुविकल्पीय, वर्णनात्मक आदि सभी प्रकार के प्रश्नों का उत्तरों सहित समावेश किया गया है।

Caution

सभी पाठों में आवश्यकतानुसार जगह-जगह **Caution** दिया गया है, जिससे विद्यार्थी गलती करने से बचने के साथ ही सही जानकारी व मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेंगे।

Continued...

Sample Content

सभी पाठों में आवश्यकतानुसार जगह-जगह **Enrich Your Knowledge** दिया गया है, जिसके माध्यम से विद्यार्थी रोचक व ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

वर्ष 2023 तक के चुनिंदा **Board** और **SQP** के प्रश्नों का उत्तरों सहित समावेश किया गया है।

पाठों को सरलता से समझने व याद रखने हेतु **Memory Map** का समावेश किया गया है।

विद्यार्थियों की संपूर्ण तैयारी हेतु प्रत्येक गद्य व पद्य पर आधारित **Self Assessments** का उत्तर सहित समावेश किया गया है।

कविताओं को सरलता से समझने के लिए उनके सरल भावार्थ दिए गए हैं। इसके साथ ही Q. R. Code के माध्यम से भावार्थ पर आधारित **Videos** भी दिए गए हैं।

इस विभाग में अनुच्छेद-लेखन, पत्र-लेखन, सूचना-लेखन, विज्ञापन-लेखन, लघुकथा-लेखन व ई-मेल लेखन का विस्तारित वर्णन करने के साथ ही पूर्ण तैयारी हेतु उस पर आधारित **Exercise and Worksheet** का उत्तर सहित समावेश किया गया है।

बोर्ड परीक्षा की पूर्ण तैयारी हेतु यहाँ **Q. R. Code** के माध्यम से **Answer** सहित **Model Paper** दिया गया है।

Sample Content

विषय-सूची

क्र.	पाठ का नाम	रचनाकार	पृष्ठ क्र.
	अपठित गद्यांश		1
	व्यावहारिक व्याकरण		
1	पदबंध		30
2	रचना के आधार पर वाक्य रूपांतरण		37
3	समास		48
4	मुहावरे		60
•	व्याकरण पर आधारित Worksheet		75
	स्पर्श भाग 2		
	काव्य-खंड		
1	साखी	कबीर	77
2	पद	मीरा	92
3	मनुष्यता	मैथिलीशरण गुप्त	104
4	पर्वत प्रदेश में पावस	सुमित्रानंदन पंत	121
5	तोप	वीरेन डंगवाल	134
6	कर चले हम फ़िदा	कैफ़ी आज़मी	145
7	आत्मत्राण	रवींद्रनाथ ठाकुर	161
	गद्य-खंड		
1	बड़े भाई साहब	प्रेमचंद	174
2	डायरी का एक पन्ना	सीताराम सेकसरिया	198
3	तताँरा-वामीरो कथा	लीलाधर मंडलोई	217
4	तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र	प्रहलाद अग्रवाल	239
5	अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले	निदा फ़ाज़ली	258
6	पतझर में टूटी पत्तियाँ	रवींद्र केलेकर	277
	I गिन्नी का सोना		
	II झेन की देन		
7	कारतूस	हबीब तनवीर	297

Sample Content

संचयन भाग 2			
1	हरिहर काका	मिथिलेश्वर	314
2	सपनों के-से दिन	गुरदयाल सिंह	327
3	टोपी शुक्ला	राही मासूम रज़ा	338
लेखन			
1	अनुच्छेद-लेखन		350
2	पत्र-लेखन		366
3	सूचना-लेखन		391
4	विज्ञापन-लेखन		414
5	लघुकथा-लेखन		431
6	ई-मेल लेखन		442
•	लेखन पर आधारित Worksheet		450

Sample Content

Boost your score in the Board Examination with our **CBSE Competency Based Questions (Mathematics): Class X.** Scan the adjacent QR code to know more.

Boost your score in the Board Examination with our "**CBSE Competency Based Questions (Science): Class X".** Scan the adjacent QR code to know more.

Don't lose out on marks in grammar, vocabulary and writing skills. Practice more and score full with Target's **CBSE English Grammar & Writing Skills: Class X**. Scan the adjacent QR Code to know more.

अपठित गद्यांश

जिस गद्य का पठन पहले न किया गया हो उसे अपठित गद्य कहते हैं। अपठित गद्यांश से भाव, विचार आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं। अत: विद्यार्थियों को अपठित गद्यांश का मूलभाव अच्छी तरह समझना अनिवार्य है। विद्यार्थी परीक्षा में पूछे गए अपठित गद्यांश का सावधानीपूर्वक व गहनता से अध्ययन करें। अच्छी तरह पढ़ने के बाद ही उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना प्रारंभ करें।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनके आधार पर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –

1. पृथ्वी पर लगातार मँडराते खतरे को देखते हुए एक अमेरिकी उद्यमी द्वारा एक इंसानी बीज बैंक को चाँद पर स्थापित करने की तैयारी हो गई है। अगर कभी इस धरती पर इंसान खत्म हो गए तो मानव सभ्यता को फिर शुरू करने में यह बैंक सहायक होगा। एक भी इंसान नहीं बचा, तो फिर बैंक का क्या होगा? यह भी सोच लिया गया है। उस स्थिति में शायद कभी किसी और ग्रह से जीव या एलियन आएँगे और चाँद पर पहुँचकर उस बैंक के सहारे इंसान जैसी खूबसूरत कृति पुन: निर्मित करेंगे। पृथ्वी पर विनाश की स्थिति में मानव बीज बैंक ही मानव के पुनर्जन्म की संभावना को जीवित रखेगा। ऐसा स्वप्न देखने वाली कंपनी लाइफशिप की स्थापना 2019 में हुई। यह कंपनी लार के रूप में लोगों का डी एन ए चाँद पर भेजने की पेशकश करती है। यह एक तरह से 99 डॉलर में चाँद के लिए एकतरफा टिकट है। चाँद पर आपकी लार मानव बीज बैंक में हमेशा के लिए रह जाएगी। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो यह मानव डाटा या मानव अस्तित्व के मूल को हमेशा के लिए संरक्षित करने का काम है। सौरमंडल के विभिन्न हिस्सों में और शायद उससे आगे भी ऐसे किसी बैंक की स्थापना संभव है।

[CBSE 2023]

i. लाइफशिप मानव बीजों को किस रूप में संरक्षित करने के लिए प्रयासरत है?

(क) रक्त के रूप में डी एन ए **(ख) लार के रूप में डी एन ए**

(ग) बीज के रूप में डी एन ए (घ) सेल के रूप में डी एन ए

ii. भविष्य में मानव अस्तित्व को संरक्षित करना संभव है –

(क) सौरमंडल के दूसरे ग्रहों के प्राणियों से मदद लेकर।

(ख) सौरमंडल के दूसरे ग्रहों के प्राणियों को मदद देकर।

(ग) सौरमंडल को छोड़कर उससे आगे बीज बैंक स्थापित करके।

(घ) सौरमंडल तथा उससे आगे भी बीज बैंक स्थापित करके।

iii. मानव मूल को चाँद पर मानव बीज बैंक के रूप में स्थापित करने जैसे प्रयास को क्या माना जा सकता है?

(क) काल्पनिक **(ख) वैज्ञानिक** (ग) अवैज्ञानिक (घ) वैचारिक

iv. लाइफशिप कंपनी की स्थापना किस उद्देश्य से की गई है?

(क) एलियन्स को धरती पर मानव जैसी सर्वश्रेष्ठ कृति के बारे में बताना परंतु उन्हें पृथ्वी से दूर रखना।

(ख) एलियन्स को धरती पर मानव जैसी सर्वश्रेष्ठ कृति के बारे में बताना परंतु उन्हें चाँद पर ही रखना।

(ग) पृथ्वी पर संपूर्ण विनाश की स्थिति में मानव को पुनर्जन्म देने की संभावना को जीवित रखना।

(घ) पृथ्वी पर संपूर्ण विनाश की स्थिति में मानव को चाँद पर जीवित रखने की कोशिश करना।

Sample Content

v. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(1) मानव बीज बैंक धरती पर इंसानी सभ्यता के नष्ट होने की स्थिति में उपयोगी होगा।

(2) मानव बीज बैंक चाँद पर सामान्य परिस्थितियों में भी सामान्य बैंक की तरह कार्यरत होगा।

(3) मानव बीज बैंक की चाँद पर स्थापना करने का विचार सर्वथा अवास्तविक और काल्पनिक है।

(4) मानव बीज बैंक की स्थापना नासा द्वारा किया गया एक विशेष अभियान है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(क) केवल (1) (ख) केवल (2) (ग) (1) और (3) (घ) (1) और (4)

2. कम उम्र में स्क्रीन पर अधिक समय बिताना बच्चों के लिए बेहद हानिकारक है। अब तक तो टीवी या कंप्यूटर ही था, जिसे माता-पिता या घर के बड़े लोग नियंत्रित कर सकते हैं, मगर मोबाइल व टैब तो हाथ में होता है। उस पर कितना समय बिताया, यह आसानी से पता नहीं चलता। उस पर अगर ये पढ़ाई का हिस्सा हो, तब कोई रोक-टोक भी कैसे की जा सकती है? एक वक्ता था, जब स्कूलों में बच्चों के मोबाइल ले जाने पर प्रतिबंध था लेकिन कोरोना महामारी के कारण उपजी परिस्थितियों ने बच्चों और स्मार्ट-फोन की दूरी दूर कर दी। उन दिनों माता-पिता ऐसी शिकायत करते हुए पाए गए कि आखिर २४ घंटे वे कैसे नज़र रख सकते हैं कि बच्चे क्या देख रहे हैं? ऐसी रिपोर्ट भी आई है कि अपने देश में बच्चे सबसे अधिक फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं। गलत वेबसाइटों पर जाकर तथा उसे देखकर कई बच्चे ऐसे-ऐसे अपराध करने लगे हैं जिनके बारे में पहले सुना नहीं जाता था। समय आ गया है कि बच्चों के गैजेट्स इस्तेमाल करने को लेकर एक सुस्पष्ट सलाह के साथ देश में जागरूकता अभियान चलाया जाए। यदि समय के साथ प्रतिस्पर्धा करनी है तो इन्हें नई-नई तकनीक से दूर नहीं किया जा सकता, मगर एक संतुलन भी आवश्यक है।

[CBSE 2023]

i. गद्यांश में कंप्यूटर की तुलना में मोबाइल को अधिक हानिप्रद क्यों माना गया है?

(क) इसका स्क्रीन छोटा होने के कारण आँखों पर बुरा असर पड़ता है।

(ख) इसका स्क्रीन छोटा होने के कारण इसका रेडियेशन भी अधिक होता है।

(ग) छोटा होने के कारण इस पर बिताए समय का हिसाब नहीं रखा जा सकता।

(घ) छोटा होने के कारण इसके गुम जाने पर इसे खोजना मुश्किल होता है।

ii. टैब और मोबाइल पर रोक लगाने में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

(क) माता-पिता तथा अभिभावकों का शिक्षित न होना। **(ख) टैब और मोबाइल का पढ़ाई का हिस्सा होना।**

(ग) रोक लगाने के उपायों की जानकारी न होना। (घ) बच्चों का टैब और मोबाइल का आदी होना।

iii. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): गैजेट्स के इस्तेमाल को लेकर एक जागरूकता अभियान आवश्यक है।

कारण (R): गैजेट्स वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था का एक अहम हिस्सा है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

iv. उपब्ध आँकड़ों के अनुसार किस देश के बच्चे सबसे अधिक फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं?

(क) जापान (ख) चीन **(ग) भारत** (घ) अमेरिका

v. कोरोना ने छोटे स्क्रीन के उपयोग को किस रूप में प्रभावित किया?

(क) छोटे स्क्रीन का उपयोग कम हो गया। (ख) छोटे स्क्रीन का उपयोग न्यूनतम हो गया।

(ग) इसका उपयोग बिलकुल अप्रभावित ही रहा। **(घ) इसका उपयोग काफी अधिक बढ़ गया।**

Sample Content

3. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान देश के विभिन्न राज्यों में सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देता है। भारत एक अनोखा राष्ट्र है, जिसका निर्माण विविध भाषा, संस्कृति, धर्म के तानों-बानों, अहिंसा और न्याय के सिद्धान्तों पर आधारित स्वाधीनता संग्राम तथा सांस्कृतिक विकास के समृद्ध इतिहास द्वारा एकता के सूत्र में बाँधकर हुआ है। हम इतिहास की बात करें या वर्तमान की भारतवर्ष में कला एवं संस्कृति का अनूठा प्रदर्शन हर समय एवं हर स्थान पर हुआ है। नृत्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। इस कला की कहानी लगभग पाँच हज़ार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता से आरंभ होती है। इसके दो प्रमुख नगरों; मोहनजोदाड़ो और हड़प्पा में अच्छी सड़कें, दो मंज़िले मकान, स्नान-घर, पक्की ईंटों के प्रयोग के सबूत मिले हैं। गुजरात के लोथल नामक स्थान की खुदाई से पता चलता है कि वहाँ नावों से सामान उतारने के लिए 216×37 मीटर लम्बी-चौड़ी तथा 15 फीट गहरी गोदी बनी हुई थी। ये लोग मिट्टी, पत्थर, धातु, हड्डी, काँच आदि की मूर्तियाँ एवं खिलौने बनाने में कुशल थे। धातु से बनी एक मूर्ति में एक नारी को कमर पर हाथ रखे नृत्य मुद्रा में दर्शाया गया है। दूसरी मूर्ति पशुपतिनाथ शिव की तथा तीसरी मूर्ति दाढ़ी वाले व्यक्ति की है। ये तीनों मूर्तियाँ कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं। मूर्ति का श्रेष्ठ होना मूर्तिकार के कौशल पर निर्भर करता है। मूर्ति की प्रत्येक भावभंगिमा को दर्शाने में मूर्तिकार जी-जान लगा देता है। भारत के प्रत्येक कोने में इस प्रकार की विभिन्न कलाएँ हमारी संस्कृति में प्रतिबिंबित होती हैं। इस अतुलनीय निधि का बचाव और प्रचार-प्रसार ही एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना है।

[CBSE SQP 2022-23]

i. भारत को अनोखा राष्ट्र कहने से लेखक का तात्पर्य है –

(क) बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन
(ख) मूर्तिकला के सर्वश्रेष्ठ नमूने
(ग) संवेदनशील भारतीय नागरिक
(घ) विभिन्नता में एकता का प्रतीक

ii. सिंधु घाटी की सभ्यता प्रतीक है –

(क) मूर्तिकार के कौशल का
(ख) एक भारत श्रेष्ठ भारत का
(ग) प्राचीन सुव्यवस्थित सभ्यता का
(घ) स्वाधीनता संग्राम के नायकों का

iii. गद्यांश हमें संदेश देता है –

(क) कलाकार अपनी कला का श्रेष्ठ प्रदर्शन करता है।
(ख) भारतीय नृत्य और संगीत की कला विश्व प्रसिद्ध है।
(ग) भारतीय सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण आवश्यक है।
(घ) स्वाधीनता संग्राम में क्रांतिकारियों का विशेष योगदान है।

iv. गद्यांश में मूर्तियों का सविस्तार वर्णन दर्शाता है –

(क) सूक्ष्म अवलोकन एवं कला-प्रेम
(ख) प्राचीन मूर्तियों की भावभंगिमा
(ग) स्थूल अवलोकन एवं कला-प्रेम
(घ) सांस्कृतिक एकता एवं सौहार्द

v. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A): भारतवर्ष में कला एवं संस्कृति का अनूठा प्रदर्शन हर समय हुआ है।
कारण (R): भारतीय वास्तुकला एवं मूर्तिकला की परंपरा अत्यंत प्राचीन है।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

Sample Content

4. परिश्रम यानी मेहनत अपना जवाब आप ही है। उसका अन्य कोई जवाब न है, न हो सकता है अर्थात जिस काम के लिए परिश्रम करना आवश्यक हो, हम चाहें कि वह अन्य किसी उपाय से पूरा हो जाए, ऐसा हो पाना कतई संभव नहीं। वह तो लगातार और मन लगाकर परिश्रम करने से ही होगा। इसी कारण कहा जाता है कि 'उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी' अर्थात उद्योग या परिश्रम करने वाले पुरुष सिंहों का ही लक्ष्मी वरण करती है। सभी प्रकार की धन-संपत्तियाँ और सफलताएँ लगातार परिश्रम से ही प्राप्त होती हैं। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है, यह परीक्षण की कसौटी पर कसा गया सत्य है। निरंतर प्रगति और विकास की मंज़िलें तय करते हुए हमारा संसार आज जिस स्तर और स्थिति तक पहुँच पाया है, वह सब हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने से नहीं हुआ। कई प्रकार के विचार बनाने, अनुसंधान करने, उनके अनुसार लगातार योजनाएँ बनाकर तथा कई तरह के अभावों और कठिनाइयों को सहते हुए निरंतर परिश्रम करते रहने से ही संभव हो पाया है। आज जो लोग सफलता के शिखर पर बैठकर दूसरों पर शासन कर रहे हैं, आदेश दे रहे हैं, ऐसी शक्ति और सत्ता प्राप्त करने के लिए पता नहीं किन-किन रास्तों से चलकर, किस-किस तरह के कष्ट और परिश्रमपूर्ण जीवन जीने के बाद उन्हें इस स्थिति में पहुँच पाने में सफलता मिल पाई है। हाथ-पैर हिलाने पर ही कुछ पाया जा सकता है, उदास या निराश होकर बैठ जाने से नहीं। निरंतर परिश्रम व्यक्ति को चुस्त-दुरुस्त रखकर सजग तो बनाता ही है, निराशाओं से दूर रख आशा-उत्साह भरा जीवन जीना भी सिखाया करता है।

[CBSE SQP 2022-23]

i. परीक्षण की कसौटी पर कसे जाने से तात्पर्य है –

(क) सत्य सिद्ध होना **(ख) कथन का प्रामाणिक होना**

(ग) आकलन प्रक्रिया तीव्र होना (घ) योग्यता का मूल्यांकन होना

ii. 'हाथ-पैर हिलाने से कुछ पाया जा सकता है।' पंक्ति के माध्यम से लेखक ..... की प्रेरणा दे रहे हैं।

(क) तैराकी **(ख) परिश्रम** (ग) परिक्षण (घ) हस्तशिल्प

iii. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

1. परिश्रम व्यक्ति को सकारात्मक बनाता है।
2. आज संसार पतन की ओर बढ़ रहा है।
3. पुरुषार्थ के बल पर ही व्यक्ति धनार्जन करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(क) केवल (1) (ख) केवल (2) **(ग) (1) और (3)** (घ) (2) और (3)

iv. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द गद्यांश में दिए गए 'अनुसंधान' शब्द के सही अर्थ को दर्शाता है –

(क) परीक्षण (ख) योजनाएँ **(ग) अन्वेषण** (घ) सिंहमुपैति

v. निम्नलिखित में से किस कथन को गद्यांश की सीख के आधार पर कहा जा सकता है –

(क) अल्पज्ञान खतरनाक होता है। (ख) गया समय वापस नहीं आता है।

(ग) मेहनत से कल्पना साकार होती है। (घ) आवश्यकता आविष्कार की जननी है।

5. साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना गया है अर्थात समाज का पूर्णरूप साहित्य में प्रतिबिंबित होता रहता है। अनादि काल से साहित्य अपने इसी धर्म का पूर्ण निर्वाह करता चला आ रहा है। वह समाज के विभिन्न रूपों का चित्रण कर एक ओर तो हमारे सामने समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है और दूसरी ओर अपनी प्रखर मेधा और स्वस्थ कल्पना द्वारा समाज के विभिन्न पहलुओं का विवेचन करता हुआ यह भी बताता है कि मानव समाज की सुख-समृद्धि, सुरक्षा और विकास के लिए कौन-सा मार्ग उपादेय है? एक आलोचक के शब्दों में- "कवि वास्तव में समाज की व्यवस्था, वातावरण, धर्म-कर्म, रीति-नीति तथा सामाजिक शिष्टाचार या लोक व्यवहार से ही अपने काव्य के उपकरण चुनता है और उनका प्रतिपादन अपने आदर्शों के अनुरूप करता है।" साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है। वह अपनी समस्याओं का

Sample Content

Page no. **5** to **29** are purposely left blank. To see complete chapter buy **Target Notes**

Sample Content

1 पदबंध

शब्द

दो या दो से अधिक वर्णों/अक्षरों से निर्मित सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनि-समूह को **शब्द** कहते हैं।

उदा. कमल, हाथी, गणेश, राजेश, पलक, नाक आदि।

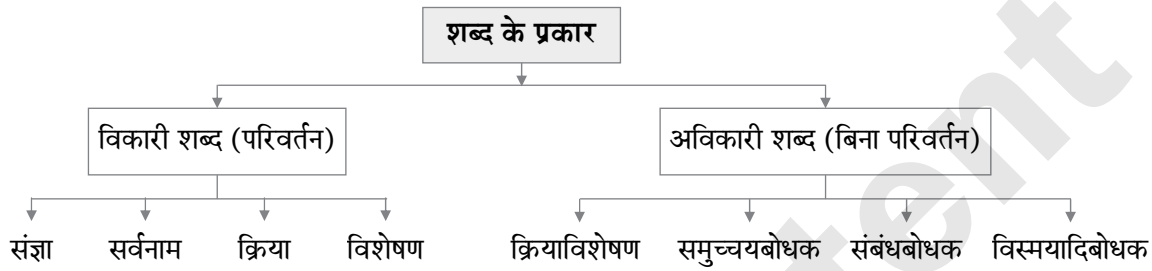

पदबंध

जब स्वतंत्र शब्दों को क्रमबद्धता से वाक्य में पिरोया जाता है तो उस वाक्य के प्रत्येक शब्द को **पद** कहते हैं। जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक ही पद का कार्य करते हैं तो उसे **पदबंध** कहते हैं।

*वाक्य के उस भाग को जिसमें एक से अधिक पद परस्पर संबद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किंतु पूरा अर्थ नहीं देते-**पदबंध** या वाक्यांश कहते हैं।* - डॉ. हरदेव बाहरी

उदा. (*पद*): साल में एक-डेढ़ महीना ही कक्षा चलती थी।

यहाँ कई शब्दों को जोड़कर एक वाक्य बनाया गया है। इस वाक्य के प्रत्येक शब्द को **पद** कहा जा सकता है।

उदा. (*पदबंध*): सबसे तेज दौड़नेवाला घोड़ा ही रेस जीतेगा।

इसमें कई पद मिलकर एक पद का कार्य कर रहे हैं। अत: इसे **पदबंध** कहा जा सकता है। इस वाक्य में 'सबसे तेज दौड़नेवाला घोड़ा' कुल चार पद हैं। इनमें 'सबसे तेज दौड़नेवाला' ये तीनों अश्रित पद हैं, जबकि 'घोड़ा' मुख्य पद है। मुख्य पद के आधार पर पदबंध का निर्धारण होता है। अत: यहाँ संज्ञा पदबंध होगा।

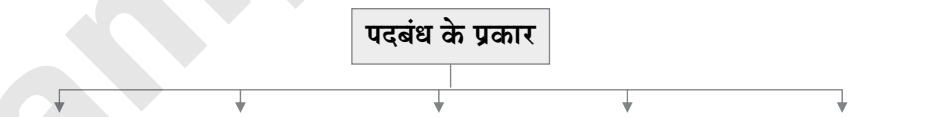

1. **संज्ञा पदबंध** – वह पदबंध जो वाक्य में संज्ञा पद का कार्य करता है, संज्ञा पदबंध कहलाता है। इसमें अन्य सभी पद संज्ञा पर आश्रित होते हैं।

उदा. (1) कमरे में आते ही भाई साहब का वह रौद्र रूप देखकर प्राण सूख जाते।

(2) टोपी को मुन्नी बाबू का कोट मिला।

2. **सर्वनाम पदबंध** – वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम पद का कार्य करता है, सर्वनाम पदबंध कहलाता है। इसमें अन्य सभी पद सर्वनाम पर आश्रित होते हैं।

उदा. (1) विरोध करने वाले व्यक्तियों में कोई नहीं बोला।

(2) मुसीबत के मारे तुम कहाँ जाओगे ?

Sample Content

3. **विशेषण पदबंध** – वह पदबंध जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हुए विशेषण का कार्य करे, विशेषण पदबंध कहलाता है।

उदा. (1) मनीष का घर बहुत सुंदर व मज़बूत है।
(2) रमेश सबसे अधिक परिश्रमी विद्यार्थी है।

4. **क्रिया पदबंध** – अनेक क्रिया-पदों से मिलकर बने पदबंध को क्रिया पदबंध कहते हैं।

उदा. (1) वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखती हुई दौड़ रही थी।
(2) तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा।

Enrich Your Knowledge

- पदबंध में एक से अधिक पद होते हैं।
- पद किसी वाक्य का अंश होता है।
- पदबंध के शब्द-क्रम निश्चित होते हैं।
- किसी भी पदबंध का मुख्य पद उस पद का निर्धारण करता है।

5. **क्रियाविशेषण पदबंध** – वह पदबंध जो वाक्य में क्रिया की विशेषता बताता है, क्रियाविशेषण पदबंध कहलाता है।

उदा. (1) हरिहर काका धीरे-धीरे चलते हुए आँगन तक पहुँचे। (2) उसने तताँरा को तरह-तरह से अपमानित किया।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

निर्देशानुसार निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –

1. 'सातवीं-आठवीं के कुछ विद्यार्थी हमें उनके बारे में बताया करते थे।' रेखांकित पदबंध है – **[CBSE 2023]**
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) विशेषण पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

2. 'बड़े-बड़े बिल्डर कई सालों से समंदर को पीछे ढकेलकर उसकी ज़मीन को हथिया रहे थे।' **[CBSE 2023]**
(1) बड़े-बड़े बिल्डर (2) पीछे ढकेलकर (3) उसकी ज़मीन (4) हाथिया रहे थे
उपर्युक्त पदबंधों में से क्रिया-विशेषण पदबंध का/के उदाहरण है/हैं :
(क) केवल (3) **(ख) केवल (2)** (ग) (2) और (4) (घ) (1) और (3)

3. 'वह महिमामय व्यक्तित्व पूरी तरह उसकी आत्मा में उतर चुका है।' इस वाक्य में क्रिया पदबंध है – **[CBSE 2023]**
(क) वह महिमामय व्यक्तित्व (ख) पूरी तरह उसकी
(ग) उसकी आत्मा में **(घ) उतर चुका है**

4. 'मास्टर प्रीतम चंद का दुबला-पतला गठीला शरीर था।' वाक्य में रेखांकित पदबंध का उपयुक्त भेद है – **[CBSE 2023]**
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध **(घ) विशेषण पदबंध**

5. 'दूसरों की सहायता करने वाले आप महान है।' इस वाक्य में रेखांकित पदबंध का उपयुक्त भेद है – **[CBSE 2023]**
(क) सर्वनाम पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) विशेषण पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

6. 'वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखती हुई दौड़ रही थी।' रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2022-23]**
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

7. 'निर्भीक और साहसी वज़ीर अली अपने अधिकार के लिए लड़ रहा था।' इस वाक्य में विशेषण पदबंध है – **[CBSE SQP 2022-23]**
(क) साहसी वज़ीर अली (ख) लिए लड़ रहा था **(ग) निर्भीक और साहसी** (घ) अपने अधिकार के लिए

Sample Content

8. क्रिया पदबंध का उदाहरण छाँटिए – **[CBSE SQP 2022-23]**

(क) बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया।

(ख) यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है।

(ग) दोनों कबूतर रातभर खामोश और उदास बैठे रहते हैं।

(घ) शैलेंद्र तो फ़िल्म-निर्माता बनने के लिए सर्वथा अयोग्य थे।

9. 'बादशाह सुलेमान मानव जाति के साथ-साथ पशु-पक्षियों के भी राजा हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2022-23]**

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) विशेषण पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

10. 'हरिहर काका धीरे-धीरे चलते हुए आँगन तक पहुँचे।' रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2022-23]**

(क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) विशेषण पदबंध **(घ) क्रियाविशेषण पदबंध**

11. 'सुलेमान केवल मानव जाति के ही राजा नहीं थे, सारे छोटे-बड़े पशु-पक्षी के भी हाकिम थे'। रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2023-24]**

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

12. 'जीने-मरने वाले मनुष्य तो हो सकते हैं पर सही अर्थों में नहीं।' इस वाक्य में विशेषण पदबंध होगा – **[CBSE SQP 2023-24]**

(क) मनुष्य तो हो सकते हैं (ख) सही अर्थों में नहीं

(ग) जीने-मरने वाले मनुष्य **(घ) जीने-मरने वाले**

13. क्रियाविशेषण पदबंध का उदाहरण छाँटिए – **[CBSE SQP 2023-24]**

(क) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

(ख) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

(ग) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

(घ) 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं।

14. 'अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2023-24]**

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) विशेषण पदबंध **(घ) क्रिया पदबंध**

15. 'खिड़की के बाहर अब असहाय दोनों कबूतर रात-भर खामोश और उदास बैठे रहते हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है – **[CBSE SQP 2023-24]**

(क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) विशेषण पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

16. 'तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।' इस वाक्य में से संज्ञा पदबंध छाँटिए –

(क) तलवार एक **(ख) तताँरा की तलवार** (ग) रहस्य थी (घ) विलक्षण रहस्य थी

17. 'कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –

(क) सर्वनाम पदबंध (ख) क्रिया पदबंध **(ग) क्रियाविशेषण पदबंध**(घ) विशेषण पदबंध

18. 'बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना शुरू कर दिया है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –

(क) विशेषण पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) संज्ञा पदबंध

19. 'तताँरा दिनभर अथक परिश्रम कर धीरे-धीरे टहलने लगा।' रेखांकित पदबंध का भेद है –

(क) क्रियाविशेषण पदबंध (ख) विशेषण पदबंध

(ग) क्रिया पदबंध (घ) संज्ञा पदबंध

Sample Content

20. तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। वाक्य में रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध
(ग) क्रिया पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

21. 'उसकी छोटी-से-छोटी बारीकियाँ फिल्म में पूरी तरह उतर आईं।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) विशेषण पदबंध **(घ) क्रिया पदबंध**

22. 'मुसीबत में उसे याद करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) सर्वनाम पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) क्रिया पदबंध **(घ) क्रियाविशेषण पदबंध**

23. 'अब यहाँ समंदर के किनारे लंबी-चौड़ी बस्ती बन गई है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रियाविशेषण पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

24. 'ग्वालियर से बंबई की दूरी ने संसार को काफी कुछ बदल दिया है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रियाविशेषण पदबंध **(ग) संज्ञा पदबंध** (घ) सर्वनाम पदबंध

25. 'गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) क्रियाविशेषण पदबंध **(ख) संज्ञा पदबंध**
(ग) सर्वनाम पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

26. 'उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) विशेषण पदबंध** (घ) क्रिया पदबंध

27. 'जीतने वाले खिलाड़ी इसी शहर के हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रियापदबंध (घ) विशेषण पदबंध

28. 'तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा।' इस वाक्य में विशेषण पदबंध है –
(क) तताँरा समुद्री बालू पर **(ख) अंतिम रंग-बिरंगी**
(ग) समुद्र पर निहारने (घ) किरणों को समुद्र पर

29. 'अब भी गीत के स्वर बह रहे थे।' रेखांकित शब्दों में कौन-सा पदबंध है? बताइए –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

30. 'आप जल्दी से अपने-अपने बिलों में चलो, फ़ौजी आ रहे हैं।' इस वाक्य में कौन-सा सर्वनाम पद है? बताइए –
(क) आप (ख) जल्दी से (ग) अपने-अपने (घ) फ़ौजी आ रहे हैं

31. 'अरुणिमा धीरे-धीरे चलते हुए वहाँ जा पहुँची।' रेखांकित पदबंध के प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रिया पदबंध
(ग) क्रियाविशेषण पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

32. 'उसकी कल्पना में वह एक अद्भुत साहसी युवक था।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

33. 'गाँव में हर वर्ष पशु-पर्व का आयोजन होता है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

34. 'मौत से जूझने वाला मैं मर नहीं सकता।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध **(ख) सर्वनाम पदबंध** (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

Sample Content

35. 'निरंतर बहता हुआ पानी साफ़ व स्वच्छ होता है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध **(घ) विशेषण पदबंध**

36. 'छोटा बच्चा रोता हुआ धीरे-धीरे माँ के पास चला गया।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध
(ग) क्रियाविशेषण पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

37. 'वज़ीर अली का कारवाँ जंगलों में भटक रहा था।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेष पदबंध

38. 'सरकार ने देशभर के गरीबों को राशन की सुविधा दी है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) सर्वनाम (ख) क्रिया पदबंध (ग) विशेषण पदबंध **(घ) संज्ञा पदबंध**

39. 'बगल वाले दादा धीरे-धीरे चलते हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

40. 'वह हमेशा कोई-न-कोई बड़ी शरारत कर बैठता है।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) विशेषण पदबंध (ग) सर्वनाम पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

41. 'बगीचे में खेलने वाले बच्चे शोर मचा रहे हैं।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) सर्वनाम पदबंध **(ख) संज्ञा पदबंध** (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

42. 'भारत भारती होकर हिंदी विराजती रहे।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

43. 'कभी एक शेर को बार-बार बहुत सुंदर अक्षरों में नकल करते।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध **(घ) विशेषण पदबंध**

44. 'मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

45. 'इस तरह अंग्रेजी पढ़ोगे, तो ज़िंदगीभर अंग्रेजी पढ़ते रह जाओगे।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

46. 'एक कथाकार हूँ मैं और कथा सुना रहा हूँ।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध **(ख) सर्वनाम पदबंध** (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

47. 'प्रात:काल छह बजे नाश्ता कर पढ़ने बैठ जाना।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

48. 'विजया हर समय झाड़ू लगाती रहती है।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

49. 'नतीजा सुनाया गया तो वह रो पड़े।' इस पदबंध में क्रिया पदबंध छाँटिए।
(क) नतीजा सुनाया (ख) तो वह **(ग) रो पड़े** (घ) गया तो वह

50. 'मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।' इस वाक्य में क्रिया पदबंध छाँटिए –
(क) मैं (ख) पीछे-पीछे **(ग) दौड़ रहा था** (घ) पीछे दौड़

51. 'भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया।' इस वाक्य में संज्ञा पदबंध छाँटिए।
(क) भारत सरकार (ख) उन्हें (ग) से (घ) सम्मानित किया

Sample Content

52. 'मेरी छोटी बहन बहुत बीमार है।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

53. 'इसकी कलात्मकता की लंबी-चौड़ी तारीफ़ें हुईं।' इस वाक्य में विशेषण पदबंध छाँटिए –
(क) लंबी-चौड़ी (ख) तारीफ़ें हुईं (ग) इसकी (घ) कलात्मकता की

54. 'हमारा बगीचा इस कोने से उस कोने तक फैला हुआ है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) विशेषण पदबंध
(ग) क्रियाविशेषण पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

55. 'हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान कहा गया है।' रेखांकित पद का प्रकार है –
(क) संज्ञा पद (ख) सर्वनाम पद (ग) क्रिया पद **(घ) विशेषण पद**

56. 'बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

57. 'हरिहर काका की जिंदगी से मैं बहुत गहरे जुड़ा हूँ।' रेखांकित पदबंध का प्रकार बताइए –
(क) क्रिया पदबंध **(ख) संज्ञा पदबंध** (ग) विशेषण पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

58. 'राजेश, सीता और पूनम ने मिलकर साथ-साथ भोजन बनाया।' रेखांकित पदबंध का भेद है?
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रियाविशेषण पदबंध** (घ) क्रिया पदबंध

59. 'काका बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थे ।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध **(घ) विशेषण पदबंध**

60. 'तीव्र गति से चलने वाला वाहन क्षतिग्रस्त हो गया है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध **(ग) क्रिया पदबंध** (घ) विशेषण पदबंध

Exercise

निर्देशानुसार निम्नलिखित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –

1. 'फैलते हुए प्रदूषण ने पक्षियों को बस्तियों से भगाना शुरू कर दिया है।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

2. 'कभी मेरी लाइब्रेरी में घुसकर कबीर या मिर्ज़ा ग़ालिब को सताने लगते हैं।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –
(क) सर्वनाम पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

3. 'नेक दिल राकेश ने बुढ़िया की सहायता की।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

4. 'औरतें अकसर इसी से सोने के गहने बनवा लेती हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) क्रियाविशेषण पदबंध (ख) विशेषण पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) क्रिया पदबंध

5. 'आदर्शों का पालन करने वाले लोग ही समाज को ऊपर ले जाते हैं।' रेखांकित पदबंध का भेद है –
(क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) क्रियाविशेषण पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

Sample Content

6. 'बीच-बीच में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाना न भूलती।' इस वाक्य में क्रियाविशेषण पदबंध छाँटिए।

i. बीच-बीच में ii. इधर-उधर iii. दृष्टि दौड़ाना iv. दौड़ाना न भूलती

(क) केवल i (ख) केवल ii (ग) केवल i और ii (घ) केवल iv

7. 'तताँरा बहुत बलशाली था।' रेखांकित पदबंध का भेद है –

(क) विशेषण पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

8. 'इफ़्फ़न के दादा और परदादा बहुत प्रसिद्ध मौलवी थे।' रेखांकित पदबंध का भेद है –

(क) सर्वनाम पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) संज्ञा पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

9. 'ख़बर हवा की तरह बह उठी।' रेखांकित पद में पदबंध का भेद लिखिए –

(क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) क्रियाविशेषण पदबंध

10. 'उसकी आँखें तरल थीं।' रेखांकित शब्द कौन-सा पदबंध है?

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

11. 'मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस मनाया।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –

(क) संज्ञा पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) सर्वनाम पदबंध (घ) क्रिया विशेषण पदबंध

12. 'धर्म से विमुख हो रहे लोगों को रास्ते पर लाना है।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –

(क) संज्ञा पदबंध (ख) सर्वनाम पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) विशेषण पदबंध

13. 'स्त्रियों का एक भाग आगे बढ़ा जिसका नेतृत्व विमल प्रतिभा कर रही थी।' रेखांकित पदबंध का भेद है –

(क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

14. 'यहाँ भी बहुत-सा अच्छा काम होने लगा।' रेखांकित पदबंध का भेद है –

(क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध (ग) क्रिया पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

15. 'जगह-जगह फोटो उतर रहे थे।' रेखांकित पदबंध का प्रकार है –

(क) क्रिया पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध

(ग) क्रियाविशेषण पदबंध (घ) सर्वनाम पदबंध

निर्देश: Exercise के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु विद्यार्थी दिए गए Q. R. Code को स्कैन करें।

Sample Content

Page no. **37** to **76** are purposely left blank. To

see complete chapter buy **Target Notes**

Sample Content

1 साखी

परिचय

रचनाकार : कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ था। इनके गुरु रामानंद थे। ये भक्ति काव्यधारा के संत कवियों में से एक माने जाते हैं। इनकी कविता सहज ही नम को छू लेती है और गहरी सामाजिक चेतना प्रकट करती है। इन्होंने एक ओर धार्मिक बाह्य आडंबरों पर गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा-परमात्मा के विरह-मिलन के गीत गाए हैं। इनका मानना था कि ईश्वर एक है और वह अरूप है। इन्होंने अनुभव ज्ञान को अधिक महत्त्व दिया। इनके काव्य की भाषा आम जन की भाषा होने के कारण उसे सधुक्कड़ी या पंचमेल खिचड़ी भाषा कहा गया। इन्होंने अपने काव्य सबद और साखियों के माध्यम से जनचेतनाओं और जनभावनाओं को लोगों तक पहुँचाया है। इन्होंने अपने जीवन के कुछ अंतिम वर्ष मगहर में बिताए और 120 वर्ष की आयु में वहीं इनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ : 'बीजक' काव्य संग्रह के तीन भाग–साखी, सबद और रमैनी।

पाठ : प्रस्तुत पाठ कबीरदास जी द्वारा रचित है। इस पाठ में आठ साखियों का वर्णन किया गया है। इन साखियों के माध्यम से कवि ने प्रेम, भक्ति, ज्ञान, परमात्मा के मिलन, मधुर वाणी, अहंकार के दुष्परिणाम आदि के महत्त्व को दर्शाया है। कवि का मानना है कि सांसारिक मोह-माया के बंधनों से मुक्त होकर केवल परमात्मा से प्रेम करना और उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करना ही जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। जो मनुष्य इस तथ्य को समझ पाया है वास्तव में उसे ही ईश्वर के साक्षात्कार हो पाए हैं।

शब्दार्थ (Glossary)

अँधियारा	अंधकार, तम (darkness)
अरू	और (and)
अषिर	अक्षर (letter)
आँगणि	आँगन (courtyard)
आपणाँ	अपना (own)
आपा	अहं (अहंकार) (ego)
ऐकै	एक (one)
औरन कौं	दूसरों को (to others)
करै	करना (doing)
कुंडलि	नाभि (navel)
कुटि	कुटिया (cottage)
खायै	खाए (to eat)
खोइ	खो जाना (get lost)
घटि घटि	घट-घट में, कण-कण में (in every way)
जागै	जागना (wake up)
जालौं	जलाऊँ (kindle)
जाल्या	जलाया (lit up)

जिवै	जीता (to live)
जे	जो (who)
तास का	उसका (his)
दीपक	दीया (lamp)
दुखिया	दुखी (sad)
देख्या	देखना (look, see)
निंदक	बुराई करने वाला (cynic)
निरमल	निर्मल, स्वच्छ (clean)
नेड़ा	निकट (near)
पंडित	ज्ञानी (knowledgeable)
पीव	प्रिय, प्रियतम (beloved)
पोथी	पुस्तक, ग्रंथ (book)
बँधाइ	बनवाकर (by making)
बन	वन, जंगल (forest)
बसै	बसना (inhabit)
बाँणी	बोली (speech)
बियोगी	प्रेम में तड़पने वाला (lover suffering the pain of separation)

Sample Content

बिरह	विरह, जुदाई (separation)
बौरा	पागल (mad)
भया	हुआ, बना (became)
भुवंगम	भुजंग, साँप (snake)
माँहि	में, अंदर (in)
मिटि	मिटना, दूर होना (disappear)
मुराड़ा	जलती हुई लकड़ी (burning wood)
मुवा	मर गया (dead, went down to the shades)
मृग	हिरन (deer)
मैं	अहंकार (ego)

रोवै	रोना (crying)
साथि	साथ (together)
साबण	साबुन (soap)
सीतल	शीतल, ठंडा (fresh)
सोवै	सोना (to sleep)
सुखिया	सुखी (happy)
सुभाइ	स्वभाव, चरित्र (behaviour)
हरि	ईश्वर (God)
हाथि	हाथ (hand)
होइ	होना (get)

भावार्थ

1. ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने वाणी को अर्थात मुँह से निकली हुई बातों को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बताया है। उन्होंने इस दोहे के माध्यम से बताया है कि हमें ऐसी मधुर बातें करनी चाहिए, जिससे हमारे मन से अहंकार अपने-आप नष्ट हो जाए। साथ ही हमारी मधुर बातें सुनकर सुनने वाले को भी सुख की अनुभूति हो और हमारे तन-मन को भी शीतलता प्रदान हो। अत: कवि ने यहाँ पर सभी के साथ प्रेमभरी मीठी बातें करने के लिए प्रेरित किया है।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।।

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ईश्वर की महत्ता बताई है। उन्होंने इस दोहे के माध्यम से कहा है कि जिस प्रकार कस्तूरी हिरन की नाभि में स्थित होती है और वह उससे अनजान होकर उसे पूरे जंगल में ढूँढ़ता रहता है ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी संसार के प्रत्येक कण-कण में तथा प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं, परंतु मनुष्य अज्ञानता के कारण उन्हें देख नहीं पाते हैं। वे ईश्वर को तीर्थस्थानों में ढूँढ़ते रहते हैं। अत: हमें ईश्वर को बाहर न खोजकर स्वयं के भीतर ही खोजना चाहिए।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ईश्वर प्राप्ति का मार्ग बताया है। इस दोहे के माध्यम से उन्होंने कहा है कि जब तक मेरे मन में मैं अर्थात अहंकार की भावना विद्यमान थी तब तक मुझे ईश्वर के साक्षात्कार नहीं हो पाए थे। अब मुझे ईश्वर के साक्षात दर्शन हो गए हैं इसलिए मेरे अंदर से अहंकार की भावना भी अपने-आप समाप्त हो गई है। जब से मैंने ईश्वर रूपी ज्ञान का दीपक देख लिया है तब से मेरे मन से अहंकार रूपी अज्ञान का अंधकार अपने-आप मिट गया है। अत: हमें कभी अपने-आप पर अहंकार नहीं करना चाहिए, क्योंकि अहंकार ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ा बाधक का काम करता है।

4. सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवै।।

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने सांसारिक सुखों और मोह-माया के बंधनों से मुक्त होने का संदेश दिया है। उनका कहना है कि पूरा संसार सांसारिक मोह-माया में उलझा हुआ है। वे केवल खाना-पीना, मौज-मस्ती, सोना आदि को ही अपने जीवन का उद्देश्य समझकर बेफ़िक्र होकर सो रहे हैं। उनके अनुसार सबसे दुखी वही हैं, क्योंकि वे दिन-रात ईश्वर की प्राप्ति की कामना करते हुए जागते और रोते रहते हैं। यहाँ पर कवि ने हमें सांसारिक नश्वरता को समझकर केवल ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया है।

5. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ।।

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने विरह-वेदना को महत्त्व दिया है। उनका कहना है कि जब मनुष्य के शरीर में राम का विरह अर्थात वियोग रूपी साँप बस जाता है तो उसे

Sample Content

बचाने के लिए कोई भी मंत्र अर्थात उपाय काम नहीं आता है। ऐसा मनुष्य राम के वियोग में जीवित नहीं रह पाता है। यदि वह किसी कारणवश जीवित रह भी गया, तो ईश्वर की प्राप्ति में अपना जीवन पागलों-सा व्यतीत करने लगता है। ईश्वर को प्राप्त करना ही उसके जीवन का एकमात्र समाधान होता है। यहाँ पर कवि के अनुसार ईश्वर को प्राप्त करना ही हमारे जीवन का एकमात्र उद्देश्य होना चाहिए।

6. निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

भावार्थ: प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने निंदा करने वाले व्यक्ति का महत्त्व बताया है। उनका कहना है कि जो व्यक्ति हमारी निंदा करता है उसे हमें अपने घर के आँगन में ही कुटिया बनाकर हमेशा अपने पास रखना चाहिए। ऐसा करने से वह हमेशा हमारे बुरे कार्यों तथा हमारी कमियों की निंदा करके बिना साबुन-पानी के ही हमारे व्यक्तित्व को स्वच्छ और निर्मल बना सकता है। यहाँ पर कवि ने हमें अपनी कमियों को पहचानकर उन्हें दूर करने की सीख दी है।

7. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

भावार्थ: प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने परमात्मा के प्रेम के महत्त्व को दर्शाया है। उनका कहना है कि इस संसार के लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तकें पढ़-पढ़कर मर गए, परंतु कोई भी पंडित नहीं बन पाया अर्थात वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति नहीं कर पाया। इसके विपरीत जो मनुष्य परमात्मा के प्रेम से संबंधित केवल एक भी अक्षर पढ़ लेता है, वही सच्चा ज्ञानी बन जाता है। यहाँ पर कवि ने हमें परमात्मा के प्रेम को समझकर सच्चा ज्ञानी बनने की प्रेरणा दी है।

8. हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

भावार्थ: प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ज्ञान के महत्त्व को दर्शाया है। वे कहते हैं कि मैंने अपने सांसारिक मोह-माया के घर को अपने हाथों से ज्ञान की लकड़ी से जला दिया है। अब जो भी मनुष्य मेरे साथ चलना चाहेगा मैं उसका भी मोह-माया रूपी घर जला दूँगा अर्थात उसके भीतर के अज्ञान को दूर कर दूँगा। साथ ही उसके मन में ईश्वर के प्रति प्रेम-भावना जागृत कर दूँगा। यहाँ पर कवि ने हमें अपने मन से सांसारिक मोह-माया को दूर कर परमात्मा के महत्त्व को समझने का संदेश दिया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है? [CBSE 2011]

अथवा

मधुर वाणी के संबंध में कबीर के विचारों को साखी के आधार पर लिखिए। [CBSE 2012]

अथवा

कबीर के अनुसार कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए और क्यों? [CBSE 2013]

उत्तर: मीठी वाणी बोलने से सुनने वाले का मन प्रसन्न हो जाता है। वे प्रेम, सम्मान व विनय भरे शब्दों को सुनकर सुखी हो जाते हैं। इसके साथ ही दूसरों को अपनी बोली-भाषा से खुश देखकर वक्ता भी प्रसन्न हो जाता है। अत: जब वक्ता मधुर भाषा में बातचीत करता है तो उसके मन से अहंकार का त्याग अपने-आप हो जाता है। उसकी बोली की मिठास दूसरों को प्रसन्न करने के साथ-साथ उसके तन को भी प्रसन्न कर देती है।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2010, 11]

उत्तर: यहाँ दीपक प्रकाश का प्रतीक है और अंधकार अज्ञानता का प्रतीक है। जिस प्रकार दीपक प्रज्वलित करने से अंधकार मिट जाता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य जब अपने अहंकार का त्यागकर ईश्वर रूपी ज्ञान का प्रकाश प्राप्त कर लेता है तो उसके मन से अज्ञान का अंधकार अपने-आप दूर हो जाता है।

Sample Content

3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते? [CBSE 2010, 11]

अथवा

कबीर की साखी के आधार पर लिखिए कि ईश्वर वस्तुत: कहाँ है। हम उसे क्यों नहीं देख पाते? [CBSE 2019]

उत्तर: ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं अर्थात ईश्वर इस संसार की प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं, परंतु अज्ञान, अहंकारी प्रवृत्ति और सांसारिक मोह-माया के कारण हम ईश्वर को स्वयं के भीतर देख नहीं पाते हैं। हम केवल बाह्य जगत में ईश्वर की खोज करते रहते हैं, इसलिए हमें ईश्वर के दर्शन नहीं हो पाते हैं।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2010, 16]

अथवा

कबीर ने किस व्यक्ति को सुखी और किसको दुखी माना है? कबीर की साखी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2016]

उत्तर: संसार में सुखी व्यक्ति वह है जो परमात्मा के प्रेम से पूरी तरह अनजान है। वह सांसारिक सुखों को भोगकर अपना जीवन मौज-मस्ती में व्यतीत करता है। संसार में दुखी व्यक्ति वह है जिसने ईश्वर के प्रेम को समझ लिया है और वह ईश्वर को पाने के लिए दिन-रात तड़पता रहता है। यहाँ 'सोना' ईश्वर के प्रति उदासीन होकर सांसारिक मोह-माया में जकड़े रहने का प्रतीक है तथा 'जागना' ईश्वर के मूल रूप को समझकर ईश्वर के प्रेम को पाने के लिए जागरूक रहने का प्रतीक है। कबीर के अनुसार सुखी व्यक्ति भौतिक सुखों की चकाचौंध में लिप्त होकर सोया हुआ है और दुखी व्यक्ति जागकर ईश्वर की प्राप्ति हेतु तड़प रहा है।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है? [CBSE 2010, 11, 19]

अथवा

कबीर के विचार से निंदक को निकट रखने के क्या-क्या लाभ हैं? [CBSE 2009]

अथवा

कबीर के अनुसार व्यक्ति अपने स्वभाव को निर्मल कैसे रख सकता है?

उत्तर: अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने यह उपाय सुझाया है कि हमें अपने निंदक को अपने आँगन में ही कुटिया बनाकर साथ रहने के लिए कहना चाहिए। उसके सदा हमारे पास रहकर हमारी निंदा करने से हम अपने भीतर की कमियों को आसानी से जान पाएँगे और अपनी कमियों को सुधारकर अपने स्वभाव को आसानी से निर्मल बना पाएँगे।

6. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ'-इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर: इस पंक्ति के माध्यम से कबीर ने प्रेम के महत्त्व को उजागर किया है। उनके अनुसार बड़ी-बड़ी पुस्तकें पढ़ने से कोई ज्ञानी नहीं बन जाता है। जो मनुष्य परमात्मा के प्रेम का केवल एक अक्षर पढ़ लेता है वास्तव में वही सबसे सच्चा ज्ञानी होता है।

7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीर की साखियों की भाषा की यह विशेषता है कि वह आम जनता की भाषा है। उसमें अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। कबीर ने जगह-जगह घूमकर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया और वहाँ की भाषाओं को सीखकर अपने काव्य में अपनाया। उनके काव्य में कई भाषाओं के शब्दों का मिश्रण दिखाई देता है। इसीलिए उनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' तथा 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है। उन्होंने जनचेतनाओं और जनभावनाओं को अपनी साखियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –

1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

उत्तर: इस पंक्ति का यह भाव है कि विरह एक साँप के समान है जो मनुष्य के शरीर में ही रहता है। वह निरंतर शरीर को पीड़ा पहुँचाता रहता है। इस विरह रूपी साँप को शांत करने के लिए किसी भी मंत्र का कोई उपाय काम नहीं आता है। यहाँ पर विरह रूपी साँप ईश्वर के प्रति प्रेम का प्रतीक है अर्थात ईश्वर को पाने के लिए हमारा तन-मन हमेशा पीड़ा में रहता है। उसे शांत करने के लिए कोई मंत्र या उपाय काम नहीं आता है। केवल ईश्वर की प्राप्ति ही इस विरह रूपी साँप को शांत करने का एकमात्र उपाय है।

Sample Content

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।

उत्तर: इस पंक्ति का यह भाव है कि कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरन की नाभि में स्थित रहता है, परंतु इस बात से अनजान हिरन उसे पाने के लिए पूरे वन में भटकता रहता है। इसी प्रकार परमात्मा भी मनुष्य के भीतर ही वास करते हैं, परंतु मनुष्य भी इस बात से अनजान होकर अज्ञानता के कारण उन्हें बाहरी जगत में ढूँढ़ता रहता है।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

उत्तर: इस पंक्ति का भाव है कि जब मेरे अंदर मैं अर्थात अहंकार भरा हुआ था तब मुझे ईश्वर के दर्शन नहीं हो पा रहे थे। अब मुझे ईश्वर के दर्शन हो गए हैं, क्योंकि मेरे अंदर से अहंकार पूरी तरह नष्ट हो गया है।

4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

उत्तर: इस पंक्ति का भाव है कि इस संसार के लोग पुस्तकें पढ़-पढ़कर मृत्यु के मुख में चले गए, परंतु कोई भी ज्ञानी नहीं बन पाया। इसके विपरीत जिसने ईश्वर के सत्य और प्रेम को जान लिया, वही सच्चा ज्ञानी बन पाया है।

भाषा अध्ययन

1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप उदाहरण के अनुसार लिखिए –

उदाहरण जिवै - जीना

औरन, माँहि, देख्या, भुवंगम, नेड़ा, आँगणि, साबण, मुवा, पीव, जालौं, तास।

उत्तर:

औरन	औरों को
माँहि	में (भीतर, मध्य)
देख्या	देखा

भुवंगम	सर्प, भुजंग
नेड़ा	नज़दीक, निकट
आँगणि	आँगन

साबण	साबुन
मुवा	मरा
पीव	प्रियतम

जालौं	जलाऊँ
तास	उसका

योग्यता विस्तार

1. 'साधु में निंदा सहन करने से विनयशीलता आती है' तथा 'व्यक्ति को मीठी व कल्याणकारी वाणी बोलनी चाहिए' – इन विषयों पर कक्षा में परिचर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर: साधु स्वभाव से ही शांत व सहनशील होते हैं। उनमें निंदा सहन करने की शक्ति होती है। यदि कोई साधु की निंदा करता है, तो साधु उसे हँसकर स्वीकार कर लेता है। वह निंदा करने वालों से किसी भी प्रकार का वाद-विवाद नहीं करता है। इसी कारण साधु में विनयशीलता आती है। वह उस विनयशीलता का पालन जीवनभर करता है।

व्यक्ति की वाणी मीठी व दूसरों का कल्याण करने वाली होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति का रूप कितना भी सुंदर हो, परंतु उसकी वाणी यदि मीठी नहीं है तो लोग उससे बात करना पसंद नहीं करते हैं। इसके विपरीत जिसकी वाणी मधुर होती है उसका रूप कैसा भी हो, लोग उसे सुनने के लिए बेचैन रहते हैं। व्यक्ति की वाणी ही व्यक्ति के संस्कारों से अवगत कराती है। अत: व्यक्ति की वाणी ऐसी होनी चाहिए जिसे सुनकर पथभ्रष्ट व्यक्ति भी अपना दुख भूलकर प्रसन्न व सुख की अनुभूति प्राप्त कर सके।

निर्देश: विद्यार्थी दिए गए उत्तर के आधार पर कक्षा में आयोजित परिचर्चा में अपना मत व्यक्त करें।

2. कस्तूरी के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

उत्तर: कस्तूरी तीक्ष्ण गंध वाला पदार्थ है। यह नर कस्तूरी मृग की नाभि में पाया जाता है। कस्तूरी का इस्तेमाल इत्र बनाने व कई औषधियाँ बनाने के लिए किया जाता है।

परियोजना कार्य

1. मीठी वाणी/बोली संबंधी व ईश्वर प्रेम संबंधी दोहों का संकलन कर चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

निर्देश: विद्यार्थी अंतरजाल व पुस्तकालय से दिए गए विषयों पर दोहों का संकलन कर चार्ट पर लिखकर भित्ति पत्रिका पर लगाएँ।

2. कबीर की साखियों को याद कीजिए और कक्षा में अंत्याक्षरी में उनका प्रयोग कीजिए।

निर्देश: विद्यार्थी कबीर की साखियों को याद करें और कक्षा में अंत्याक्षरी में उनका प्रयोग करें।

Sample Content

पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1.

ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ।
अपना तन सीतल करै, औरन कौं सुख होइ।।

i. मनुष्य की वाणी कैसी होनी चाहिए?
(क) कठोर **(ख) मधुर** (ग) कर्कश (घ) धीमी

ii. मीठी वाणी का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(1) तन को शीतलता प्रदान होती है। (2) सुनने वाले को सुख का अनुभव होता है।
(3) सुनने वाले को बुरा लगता है। (4) मन उदास हो जाता है।
(क) (1) और (2) (ख) (3) और (4) (ग) (1), (2) और (3) (घ) (2), (3) और (4)

iii. 'मन का आपा खोइ' इस पंक्ति का क्या आशय है?
(क) मन में अहंकार जागृत होना **(ख) मन से अहंकार नष्ट होना**
(ग) मन के अहंकार को बढ़ावा देना (घ) मन से अहंकार कम होना

iv. प्रस्तुत पद्यांश में मधुर वाणी सुनकर किसे सुख की अनुभूति होती है?
(क) स्वयं को (ख) ईश्वर को (ग) मित्रों को **(घ) दूसरों को**

v. प्रस्तुत पद्यांश में क्या संदेश दिया गया है?
(1) मीठी बातें करना (2) अहंकार का त्याग करना
(3) अपने मन को शांत और प्रसन्न करना (4) दूसरों को दुख की अनुभूति होना
(क) (1) और (2) (ख) (3) और (4) (ग) (1), (2) और (3) **(घ) (1), (2), (3) और (4)**

2.

कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।
ऐसैं घटि घटि राँम है, दुनियाँ देखै नाँहिं।।

i. कस्तूरी कहाँ बसी होती है?
(क) वन में (ख) प्रत्येक कण में (ग) हृदय में **(घ) मृग की नाभि में**

ii. मृग कस्तूरी को कहाँ ढूँढ़ता रहता है?
(क) वन में (ख) पहाड़ों पर (ग) नदी किनारे (घ) झील किनारे

iii. परमात्मा कहाँ वास करते हैं?
(1) प्रत्येक कण में (2) मनुष्य के हृदय में (3) बाह्य जगत में (4) मंदिर में
(क) (1) और (2) (ख) (2) और (3) (ग) केवल (4) (घ) (2) और (4)

iv. दुनिया किसे नहीं देख पाती है?
(क) मंदिर में बसे परमात्मा को (ख) अदृश्य परमात्मा को
(ग) मन में बसे परमात्मा को (घ) मूर्तिरूपी परमात्मा को

v. प्रस्तुत पंक्तियों में क्या संदेश दिया गया है?
(1) परमात्मा की प्राप्ति के लिए पूजा-पाठ करना चाहिए। (2) परमात्मा प्रत्येक मनुष्य के भीतर वास करते हैं।
(3) परमात्मा की प्राप्ति तीर्थस्थानों में हो सकती है। (4) परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
(क) केवल (1) **(ख) केवल (2)** (ग) (1) और (2) (घ) (3) और (4)

Sample Content

3.

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

i. प्रस्तुत पद्यांश के अनुसार कवि को ईश्वर किस स्थिति में नहीं मिल पा रहे थे?

(क) जब वह सांसारिक भव बंधनों में पड़ा था **(ख) जब उसमें अहंकार भरा हुआ था**
(ग) जब उसे आध्यात्मिक ज्ञान नहीं था (घ) जब तक उसने ईश्वर का स्मरण नहीं किया था

ii. कवि का अज्ञान रूपी अंधकार किसके माध्यम से दूर हो गया?

(क) ईश्वर के दर्शन मात्र से (ख) ईश्वर के स्मरण मात्र से
(ग) ज्ञानरूपी दीपक के माध्यम से (घ) गुरु के उपदेश के माध्यम से

iii. कवि को ईश्वर के दर्शन होने पर क्या लाभ हुआ?

(क) वह बहुत ज्ञानी हो गया **(ख) उसके भीतर का 'मैं' समाप्त हो गया**
(ग) उसको अपनी शक्ति का आभास हो गया (घ) उसे संसार व्यर्थ लगने लगा

iv. 'दीपक' किसका प्रतीक है?

(क) उजाले का **(ख) ज्ञान का** (ग) संसार का (घ) खुशियों का

v. सब अँधियारा मिट गया, पंक्ति में किसके विषय में कहा गया है?

(क) हरि के विषय में (ख) गुरु के विषय में (ग) मित्र के विषय में (घ) रिश्तेदारों के विषय में

4.

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ।।

i. कवि के अनुसार हमें किसे अपने पास रखना चाहिए?

(क) मित्र को (ख) पड़ोसी को **(ग) निंदक को** (घ) रिश्तेदार को

ii. निंदा करने वाले व्यक्ति को कहाँ रखना चाहिए?

(क) पड़ोस में (ख) खुद से दूर **(ग) अपने पास में** (घ) घर से दूर

iii. निंदक को पास रखने का क्या कारण है?

(क) वह हमें हमारी कमियों से अवगत कराएगा (ख) वह हमारी दिन-रात प्रशंसा करेगा
(ग) वह हमें सबकी पूरी खबर देगा (घ) वह हमारे अज्ञान को दूर करेगा

iv. निंदक के पास रहने पर हमारा स्वभाव कैसा बन जाएगा?

(क) कठोर **(ख) निर्मल** (ग) शांत (घ) क्रोधी

v. निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : हमें अपने निंदकों को अपने से दूर रखना चाहिए।
कारण (R) : वे हमें हमारी कमियों से अवगत कराते हैं।

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

Sample Content

5.

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

i. संसार का ज्ञानी न बन पाने का क्या कारण था?

(क) ईश्वर को बाह्य जगत में ढूँढ़ना **(ख) ईश्वर के प्रेम से अज्ञान होना**

(ग) ईश्वर की भक्ति न करना (घ) ईश्वर की पूजा न करना

ii. पद्यांश में 'पीव' किसका प्रतीक है?

(क) परमात्मा (ख) गुरु (ग) शिष्य (घ) आत्मा

iii. क्या करने से मनुष्य पंडित अर्थात ज्ञानी बन जाता है?

(1) पुस्तकें पढ़ने से (2) परमात्मा के प्रेम का एक अक्षर पढ़ने से

(3) ज्ञान बाँटने से (4) तप करने से

(क) केवल (1) **(ख) केवल (2)** (ग) (1) और (2) (घ) (3) और (4)

iv. प्रस्तुत पद्यांश से क्या संदेश प्राप्त होता है?

(क) दिन-रात पुस्तकें पढ़ना (ख) दूसरों को ज्ञान बाँटना

(ग) परमात्मा का स्मरण करना (घ) पुस्तक का एक-एक अक्षर पढ़ डालना

v. 'ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ' इस पंक्ति में किसके महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है?

(क) सांसारिक सुख के **(ख) परमात्मा के प्रेम के**

(ग) वैराग्य जीवन के (घ) ज्ञान प्राप्ति के

6.

हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि।।

i. कबीर ने अपना घर क्यों जलाया?

(क) अज्ञानता को नष्ट करने के लिए **(ख) सांसारिक मोह-माया से मुक्ति पाने के लिए**

(ग) अंधकार को दूर करने के लिए (घ) अंधविश्वास को दूर करने के लिए

ii. 'आपणाँ' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) पराया **(ख) अपना** (ग) उसका (घ) सबका

iii. 'मुराड़ा' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) जलता हुआ खेत (ख) जलता हुआ पेड़ **(ग) जलती हुई लकड़ी** (घ) जलता हुआ घर

iv. कबीर किसका घर जलाने की बात कर रहे हैं?

(1) जो उनका परम शत्रु है (2) जो परमात्मा को नहीं मानता है

(3) जो उनके साथ भक्ति मार्ग पर चलने को तैयार है (4) जो उनकी बात नहीं मानता है

(क) केवल (1) **(ख) केवल (3)** (ग) (1) और (2) (घ) (3) और (4)

v. प्रस्तुत पद्यांश से क्या संदेश प्राप्त होता है?

(क) सांसारिक मोह-माया में उलझकर सुख प्राप्त करना

(ख) सांसारिक मोह-माया त्यागकर परमात्मा की भक्ति करना

(ग) सांसारिक मोह-माया में उलझकर परमात्मा की खोज करना

(घ) सांसारिक मोह-माया त्यागकर तीर्थस्थानों में घूमना

Sample Content

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'साखी' काव्य के रचयिता कौन हैं?
(क) बिहारी (ख) सूरदास **(ग) कबीर** (घ) रैदास

2. कबीर के अनुसार सुखी लोग कौन हैं?
(क) जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया है **(ख) जो लोग मौज-मस्ती में जी रहे हैं**
(ग) जो दिन रात पूजा-पाठ में व्यस्त हैं (घ) जो ईश्वर को बाह्य जगत में ढूँढ़ रहे हैं

3. संसार के सुखी लोगों की दिनचर्या क्या है?
(क) जागना और रोना **(ख) खाना और सोना** (ग) घूमना और सोना (घ) खाना और जागना

4. कबीर के अनुसार कौन दुखी है?
(क) संसार (ख) निंदक (ग) परमात्मा **(घ) स्वयं कबीर**

5. परमात्मा को पाने के लिए कबीर दिन-रात क्या करते हैं?
(क) परमात्मा की खोज करते हैं **(ख) जागते और रोते हैं**
(ग) तीर्थस्थानों में घूमते हैं (घ) कठोर तप करते हैं

6. विरह किसके समान है?
(क) मृग (ख) बिच्छू **(ग) सर्प** (घ) नेवले

7. विरह कहाँ बसता है?
(क) मनुष्य के तन में (ख) बाह्य जगत में (ग) घर में (घ) जंगल में

8. राम के वियोग में जीने वाले व्यक्ति की क्या दशा हो जाती है?
(क) वह बहुत प्रसन्न रहता है। **(ख) वह पागल हो जाता है**
(ग) वह उदास हो जाता है (घ) वह शांत हो जाता है

9. कबीर की साखियों में किन भाषा के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है?
(i) अवधी (ii) राजस्थानी (iii) मराठी (iv) पंजाबी
(क) (i) और (ii) (ख) (iii) और (iv) (ग) (i), (ii) और (iii) **(घ) (i), (ii) और (iv)**

10. 'साखी' शब्द का क्या अर्थ है?
(क) अज्ञान (ख) विश्वास **(ग) प्रत्यक्ष ज्ञान** (घ) अंधविश्वास

11. प्रत्यक्ष ज्ञान कौन किसे प्रदान करता है?
(क) गुरु, शिष्य को (ख) शिष्य, गुरु को (ग) परमात्मा, भक्त को (घ) माता, बालक को

12. कबीर की भाषा को क्या कहा जाता है?
(i) पंचमेल खिचड़ी (ii) सधुक्कड़ी (iii) मिश्रित भाषा (iv) अक्खड़ भाषा
(क) (i) और (ii) (ख) (iii) और (iv) (ग) (i), (ii) और (iii) (घ) (ii), (iii) और (iv)

Sample Content

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

1. कबीरदास की साखियों के मुख्य उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2010, 16]

उत्तर : कबीर की साखियों के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

i. मनुष्य को अपना अहंकार त्यागकर मीठी वाणी बोलनी चाहिए।

ii. ईश्वर को बाह्य जगत में न ढूँढ़कर स्वयं के भीतर ढूँढ़ना चाहिए।

iii. सांसारिक मोह-माया को त्यागकर परमात्मा की प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए।

iv. अपनी निंदा करने वाले को अपने पास रखकर अपने स्वभाव में सकारात्मक परिवर्तन लाने चाहिए।

v. ज्ञानी बनने के लिए अधिक पुस्तकें पढ़ने की बजाय परमात्मा के प्रेम का केवल एक अक्षर पढ़ना चाहिए।

2. कबीर की भक्ति-भावना का वर्णन अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2012]

उत्तर : कबीर भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के कवि थे। उनका मानना था कि ईश्वर निराकार हैं, इसलिए उन्हें मंदिर-मस्जिदों में ढूँढ़ना व्यर्थ है। वे राम भक्त थे और उन्होंने राम को निर्गुण-निराकार रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने मूर्तिपूजा का भी खंडन किया था साथ ही बाह्य आडंबरों का भी विरोध किया था। उनके अनुसार ईश्वर इस संसार के कण-कण में और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। इसीलिए ईश्वर को बाहरी जगत में ढूँढ़ने की बजाय स्वयं के भीतर ढूँढ़ना चाहिए। उनकी भक्ति आध्यात्मिक कोटि की थी। वे ईश्वर की प्राप्ति हेतु उनकी भक्ति में सदैव लीन रहते थे।

3. कबीर ने अपनी साखियों में रूढ़ियों का विरोध किस प्रकार किया है? एक उदाहरण दीजिए। [CBSE 2012]

उत्तर : कबीर ने अपनी साखियों के माध्यम से बाह्य आडंबरों और रूढ़ियों का विरोध करते हुए कहा है कि मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए मंदिर-मस्जिद आदि तीर्थस्थानों में भटकता रहता है। ऐसे मनुष्यों में ईश्वर के प्रति ज्ञान का अभाव है। उन्हें ईश्वर को बाह्य जगत में नहीं बल्कि स्वयं के भीतर ढूँढ़ना चाहिए।

उदाहरण : कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरन की नाभि में रहता है और वह उससे अनजान होकर उसे पूरे वन में ढूँढ़ता फिरता है।

4. कबीर की किसी साखी के आधार पर बताइए कि कबीर किन जीवनमूल्यों को मानव के लिए आवश्यक मानते हैं? [CBSE 2014]

अथवा

कबीर की साखियों से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : कबीर की साखियों में नैतिक मूल्यों का वर्णन किया गया है। उनकी साखियों के माध्यम से हमें मीठी बातें करने, अपने अंदर के अहंकार को त्यागने, ईश्वर को बाह्य जगत में न ढूँढ़कर स्वयं के भीतर ढूँढ़ने, अज्ञानता से दूर रहकर ज्ञान ग्रहण करने, सांसारिक मोह-माया का त्याग करके परमात्मा की भक्ति में लीन होने, ईश्वर के प्रेम को समझने आदि नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने की शिक्षा मिलती है। कबीर इन सभी जीवनमूल्यों को मानव के लिए आवश्यक मानते हैं। इन मूल्यों के माध्यम से ही मनुष्य वास्तविक जगत को पहचानकर परमात्मा से एकाकार कर सकता है।

5. मन का आपा खोने का आशय बताइए। [CBSE 2015]

उत्तर : मन का आपा खोने का आशय है अपने मन में बसे अहंकार का त्याग कर देना। कबीरदास का मानना है कि मनुष्य के मन में जब तक अहंकार की भावना व्याप्त रहेगी तब तक वह स्वयं और दूसरों को प्रसन्न नहीं कर पाएगा। अत: उसे अपने मन में बसे अहंकार को दूर करने के लिए सभी से मीठी बातें करनी चाहिए। उसकी मीठी बातों से उसके और औरों के भीतर का अहंकार अपने-आप नष्ट हो जाएगा। इससे वह स्वयं खुश रहेगा और दूसरों को भी सुखी एवं प्रसन्न रख पाएगा। कवि ने यहाँ पर व्यक्ति के अच्छे व्यवहार को महत्त्व दिया है। व्यक्ति का अच्छा व्यवहार ही उसे जीवन में सुख, शांति व समृद्धि प्रदान करता है।

Sample Content

6. अपने अंदर का दीपक दिखाई देने पर कौन-सा अँधियारा कैसे मिट जाता है? कबीर की साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2015]

उत्तर: कबीर ने अपनी साखी में दीपक को अंधकार दूर करने का माध्यम बताया है। कबीर के अनुसार दीपक ज्ञान का प्रतीक है और अंधकार अज्ञान का प्रतीक है। जब तक मनुष्य के भीतर अज्ञान रूपी अंधकार विद्यमान रहता है तब तक वह ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर पाता है। जैसे ही वह अपने अंदर ज्ञान रूपी दीपक को देख लेता है, तो उसके अंदर से अहंकार, अंधविश्वास, लोभ, लालच, स्वार्थ, ईर्ष्या आदि अंधकाररूपी बुरी भावनाएँ अपने-आप समाप्त हो जाती हैं। अत: मनुष्य जैसे ही अपने मन से अहंकार रूपी अज्ञान का नाश करता है वैसे ही उसे परमात्मा रूपी ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

7. पोथी पढ़-पढ़कर भी ज्ञान प्राप्त न होने से कबीर का क्या तात्पर्य है? [CBSE 2015, 16]

उत्तर: पोथी पढ़-पढ़कर भी ज्ञान प्राप्त न होने से कबीर का यह तात्पर्य है कि केवल किताबें पढ़ने से कोई भी व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन जाता है। ज्ञानी बनने के लिए व्यक्ति के अंदर प्रेम की भावना होना आवश्यक है। जो व्यक्ति परमात्मा के प्रेम का केवल एक अक्षर पढ़ लेता है, वह व्यक्ति वास्तव में सच्चा ज्ञानी बन जाता है। कबीर ने यहाँ पर किताबी ज्ञान से अधिक परमात्मा के प्रेम को महत्त्व दिया है।

8. 'ऐकै अषिर पीव का पढ़ै सु पंडित होय' पंक्ति का आप क्या अर्थ समझते हैं? प्रेम का एक अक्षर सभी ग्रंथों से किस प्रकार भारी है, अपने जीवन के एक अनुभव के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2015, 19]

उत्तर: कबीरदास ने इस पंक्ति के माध्यम से प्रेम के महत्त्व को दर्शाया है। उन्होंने कहा है कि मनुष्य बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़कर ज्ञानी या विद्वान नहीं बन जाता है। जो परमात्मा रूपी प्रेम का एक भी अक्षर पढ़ लेता है वह वास्तव में सच्चा ज्ञानी बन जाता है। अत: ज्ञानी बनने के लिए परमात्मा के प्रेम को समझना आवश्यक है। मैं जब दसवीं कक्षा में पढ़ता था तब मैं एक गरीब वृद्ध से केले खरीद रहा था। उस केले वाले के पास एक अमीर व्यक्ति अपनी बड़ी गाड़ी से उतरकर केले खरीदने आया। उसने वृद्ध से दो दर्जन केले लिए और बदले में उसके आधे पैसों से भी कम पैसे दिए। जब वृद्ध ने अपने पूरे पैसे माँगे तो उसने वृद्ध को डाँट-फटकार लगाई। वृद्ध सेठ की बातें सुनकर रोने लगा। तभी वहाँ एक भैया आए जो वृद्ध को उसके रोने का कारण पूछने लगे। उन्होंने उस वृद्ध से दो दर्जन केले खरीदें और बदले में पाँच गुना ज़्यादा पैसे देकर चला गया। इस घटना से मैं समझ गया कि मनुष्य पढ़-लिखकर ज्ञानी नहीं बनता। वास्तव में दूसरों के प्रति प्रेम भावना रखने वाला ही सच्चा ज्ञानी होता है।

9. कबीर ने सच्चा भक्त किसे कहा है? [CBSE 2016]

उत्तर: कबीर ने सच्चा भक्त उसे कहा है, जिसने सांसारिक मोह-माया एवं अहंकार का त्याग करके केवल ईश्वर के प्रेम को समझा है और ईश्वर की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करता रहा है। केवल परमात्मा को प्राप्त करना ही जिसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है, वही ईश्वर का सच्चा भक्त है।

10. कबीर ने अपने दोहे में 'हिरण' का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है? क्या आप भी कबीर के विचार से सहमत हैं? अपना उत्तर स्पष्ट करके लिखिए। [CBSE 2016]

उत्तर: कबीर ने अपने दोहे के माध्यम से बताया है कि कस्तूरी नामक सुगंधित पदार्थ हिरण की नाभि में ही होता है, परंतु हिरण इस बात से अज्ञान रहता है। वह कस्तूरी की खोज पूरे वन में करता है। मृग की ही तरह मनुष्य भी इस बात से अनजान रहता है कि ईश्वर उसके भीतर ही वास करते हैं। वह अज्ञानवश ईश्वर की खोज बाह्य जगत में करता रहता है। यहाँ पर कबीर ने हिरण का उदाहरण देकर मनुष्य की अज्ञानता को दर्शाया है। मैं कबीर के विचार से पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि हमें ईश्वर ने ही बनाया है। हम ईश्वर के ही अंश हैं इस बात से अवगत होने के बाद भी मनुष्य ईश्वर की प्राप्ति के लिए तीर्थस्थानों पर जाते हैं। मूर्तिरूप में स्थापित ईश्वर के दर्शन करते हैं। ऐसा करके मनुष्य को ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती, बल्कि निराशा ही हाथ लगती है।

11. कबीर ने ईश्वर का निवास कहाँ बताया है? [CBSE 2016]

उत्तर: कबीर ने ईश्वर का निवास संसार के कण-कण में बताया है। उन्होंने कहा है कि ईश्वर को तीर्थस्थानों में खोजना व्यर्थ है। ईश्वर तो प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं, परंतु मनुष्य अपनी अज्ञानता के कारण उन्हें देख नहीं पाते हैं और बाह्य जगत में ईश्वर को खोजने में अपना समय व्यर्थ करते हैं। अत: मनुष्य को ईश्वर की खोज इधर-उधर न करके स्वयं के भीतर ही करनी चाहिए।

Sample Content

12. कबीर ने अपने दोहे में निंदक को समीप रखने की सलाह दी है। क्या आप भी अपने निंदक को पसंद करते हैं? निंदक के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए उससे होने वाले लाभों के संदर्भ में लिखिए। [CBSE 2016]

अथवा

कबीर ने निंदक को पास रखने की सलाह क्यों दी है? क्या यह सलाह आपको उचित प्रतीत होती है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। [CBSE SQP 2023-24]

उत्तर: कबीर ने अपने दोहे में निंदक को समीप रखने की सलाह दी है, क्योंकि उनका मानना है कि निंदक हमारे हितैषी के जैसे होते हैं। वे जब हमारे समीप रहते हैं तो हमारे कार्यों की निंदा करते हुए हमें हमारी कमियों से अवगत कराते हैं। इससे हम अपनी कमियों को सुधारकर बिना साबुन-पानी के ही अपने स्वभाव को निर्मल बना सकते हैं। इसीलिए मैं भी निंदक को पसंद करता हूँ और उसे अपने समीप रखता हूँ। वह मेरे कार्यों की जाँच-परख करके उनमें निहित कमियों को निकालता है। मैं इसमें बुरा महसूस नहीं करता, बल्कि उन कमियों को सुधारकर उन्हें और बेहतर करने का प्रयास करता हूँ। ऐसा करके मेरा व्यक्तित्व और निखर जाता है। अत: हमें निंदक को अपना हितैषी समझकर अपने समीप रखना चाहिए।

13. विरह रूपी सर्प कबीर के अनुसार कौन है और 'मंत्र' किसे कहा गया है? [CBSE 2018]

उत्तर: कबीर के अनुसार परमात्मा से बिछड़ने या न मिलने का विरह सर्प के समान बन जाता है। वह शरीर को निरंतर कष्ट पहुँचाता रहता है। जिस प्रकार सर्प के विष को ठीक करने का कोई उपाय नहीं होता है उसी प्रकार शरीर में व्याप्त परमात्मा के मिलन के विरह को भी ठीक करने का कोई मंत्र नहीं होता है। कबीर ने यहाँ पर 'मंत्र' उपाय को कहा है।

14. पठित साखियों के आधार पर वाणी तथा सुखी और निंदक के बारे में कबीर के विचारों पर चर्चा कीजिए। [CBSE 2019]

उत्तर: वाणी: कबीर कहते हैं कि हमें मधुर वाणी बोलनी चाहिए, जिससे मन में व्याप्त अहंकार दूर हो जाए। मधुर वाणी बोलने से दूसरों को सुख की अनुभूति तो होगी ही साथ ही हमारा तन-मन भी शीतल हो जाएगा।

सुखी: जो लोग परमात्मा से अनजान होकर सांसारिक सुखों को भोगते हुए केवल खाते और सोते रहते हैं, वे सुखी लोग हैं।

निंदक: निंदक एक तरह से हमारा हितैषी होता है। वह हमारे दोषों व कमियों से हमें अवगत कराकर हमारे स्वभाव को निर्मल बना देता है।

15. कबीर निंदक को अपने निकट रखने का परामर्श क्यों देते हैं? [CBSE 2020]

अथवा

कबीर निंदक व्यक्ति को अपने सामने रखने की बात क्यों करते हैं?

उत्तर: कबीर निंदक को अपने निकट रखने का परामर्श इसलिए देते हैं क्योंकि निंदक का स्वभाव सभी की निंदा करना होता है। वह अपने आस-पास के लोगों की बातें सुनकर उनकी कमियों से उन्हें अवगत कराता है। यदि निंदक हमारे निकट रहेगा तो वह हमारे कार्यों का निरीक्षण कर हमारी कमियों से हमें रूबरू करा सकता है। इससे हम बिना साबुन और पानी के ही अपनी कमियों को दूर कर अपना स्वभाव निर्मल बना सकते हैं।

16. साखी शब्द का क्या अर्थ है? कबीर ने अपनी साखियों के माध्यम से किन भावनाओं को व्यक्त किया है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [CBSE 2020]

उत्तर: साखी शब्द साक्ष्य से बना है जिसका अर्थ है प्रत्यक्ष ज्ञान। कबीर ने अपने जीवन के प्रत्यक्ष ज्ञान को साखियों के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने अपनी साखियों के माध्यम से दूसरों से मीठी वाणी में बातें करके सद्व्यवहार बनाए रखना, मन के अहंकार को त्यागना, ईश्वर के प्रति प्रेम भावना को समझना, परमात्मा की खोज अपने भीतर करना आदि भावनाओं को व्यक्त किया है।

17. कबीर ने 'ईश्वर-प्रेम' को किस प्रकार समझाया है? [CBSE 2020]

उत्तर: कबीर ईश्वर से बहुत प्रेम करते थे। उनका मानना था कि ईश्वर इस संसार के प्रत्येक कण-कण में बसे हुए हैं। वे प्रत्येक मनुष्य के हृदय में भी बसे हुए हैं। बस मनुष्य को अपने अंदर बसे हुए ईश्वर को प्राप्त करना है। ईश्वर से न मिलने का विरह सर्प की तरह मनुष्य के शरीर में रहकर उसे कष्ट पहुँचाता रहता है। उसे ठीक करने के लिए कोई उपाय काम नहीं आता है। ईश्वर के विरह में जीने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे पागल बन जाता है। जो व्यक्ति ईश्वर के प्रेम को समझ लेता है वह बिना पुस्तकें पढ़े ही सच्चा ज्ञानी बन जाता है।

Sample Content

18. कबीर के दोहों के आधार पर कस्तूरी की उपमा को स्पष्ट कीजिए। मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए? स्पष्ट कीजिए। [CBSE 2020]

उत्तर: कबीर ने यहाँ पर मनुष्य को मृग की उपमा दी है और परमात्मा को कस्तूरी की उपमा दी है। जिस प्रकार मृग अज्ञानता के कारण स्वयं की नाभि में बसी हुई कस्तूरी को पूरे वन में ढूँढ़ता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी अपने अज्ञान के कारण स्वयं के भीतर के परमात्मा को पहचान नहीं पाता है। वह उसे ढूँढ़ने के लिए बाह्य जगत में भटकता रहता है। मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए स्वयं के भीतर झाँकना चाहिए। वहीं उसे ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है।

19. कबीर के दोहों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से बताया है कि ईश्वर सच्चे मन में वास करते हैं। कुछ लोग केवल दिखावे के लिए ईश्वर की भक्ति करते हैं; तिलक लगाकर माला पहनते हैं; राम नाम का जाप करके भक्ति का केवल ढोंग करते हैं। ईश्वर ऐसे लोगों के हृदय में वास नहीं करते हैं। कबीर के अनुसार ईश्वर बाह्य जगत में नहीं बल्कि प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। इसीलिए उन्हें बाह्य जगत में न ढूँढ़कर स्वयं के भीतर ढूँढ़ना चाहिए।

20. कबीर के अनुसार मनुष्य की वाणी कैसी होनी चाहिए और उस वाणी का सब पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: कबीर के अनुसार मनुष्य की वाणी मीठी होनी चाहिए। जिसे सुनकर मन से अहंकार की भावना अपने आप नष्ट हो सके। मीठी वाणी इतनी प्रभावशाली होती है कि उसे सुनने वाले को सुख की अनुभूति होती है साथ ही बोलने वाले व्यक्ति का तन-मन भी शांत व शीतल हो जाता है। अत: मनुष्य की मीठी वाणी उसके लिए व औरों के लिए कल्याणकारी होनी चाहिए।

21. कबीर के अनुसार ईश्वर कहाँ वास करते हैं? हम उन्हें देख क्यों नहीं पाते हैं?

उत्तर: कबीर के अनुसार ईश्वर इस संसार के प्रत्येक कण-कण में और प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। हम अपनी अज्ञानता के कारण ईश्वर को मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आदि तीर्थस्थानों में खोजते रहते हैं। ऐसा करके हमें ईश्वर की प्राप्ति तो नहीं होती है केवल निराशा ही हाथ लगती है। इसीलिए हमें ईश्वर को पाने के लिए अपनी आँखों पर पड़ा अज्ञानता का परदा दूर करके ईश्वर को स्वयं के भीतर ही ढूँढ़ना चाहिए।

22. कबीर के अनुसार संसार के लोग सुखी क्यों हैं? वे लोग किस सत्य से अनजान हैं? इस पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर: कबीर के अनुसार सांसारिक मोह-माया में उलझे लोग; भोग-विलास में डूबे लोग; जिनके जीवन का उद्देश्य केवल मौज-मस्ती और खाना-पीना है। ऐसे लोग सुखी हैं क्योंकि वे परमात्मा के सत्य से अनजान हैं। जिस दिन वे सांसारिक मोह-माया के जाल को समझ गए और परमात्मा के सत्य को जान गए उस दिन वे भी कबीर की ही भाँति ईश्वर प्राप्ति की कामना करने लगेंगे। ईश्वर के न मिलने से वे भी दुखी होकर रोते व जागते रहेंगे।

23. कबीर की साखियों के आधार पर विरही की दशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: परमात्मा के न मिलने पर मनुष्य विरही बन जाता है। उसका विरह साँप के रूप में उसके तन में बस जाता है और अपना विष छोड़कर विरही को पीड़ा पहुँचाता रहता है। ऐसे विरह को ठीक करने का कोई उपाय नहीं रहता है। वह परमात्मा के विरह में तड़पकर जीवित नहीं रह पाता है। यदि वह जीवित रहा भी तो अपना बाकी का जीवन पागलों की भाँति व्यतीत करता है।

24. कवि ने अहंकार को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक क्यों माना है? कबीर की साखी के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर: कवि ने अहंकार को ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक इसलिए माना है क्योंकि जिस मनुष्य के मन में अहंकार पनपता है उसे स्वयं के आगे कोई श्रेष्ठ नज़र नहीं आता है। वह औरों को स्वयं से तुच्छ व हीन समझने लगता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए मनुष्य का हृदय अहंकार व अन्य बुरी भावनाओं से मुक्त होना चाहिए। उसके मन में केवल प्रेम व परमात्मा को प्राप्त करने की भावना होनी चाहिए। जिस पल मनुष्य का हृदय अहंकार जैसी बुरी भावनाओं से मुक्त हो जाएगा उस पल मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति का मार्ग अपने-आप नज़र आने लगेगा।

Sample Content

25. कबीर किसकी उपासना करते थे और उन्होंने किसका विरोध किया और क्यों?

उत्तर : कबीर निर्गुण-निराकार ब्रह्म (राम) की उपासना करते थे। उनके अनुसार ईश्वर को मूर्तिरूप में ढूँढ़ना या उनकी पूजा करना व्यर्थ है। उनका कोई रूप नहीं है। वे ईश्वर को बाह्य जगत में ढूँढ़ने का विरोध करते थे। तीर्थस्थानों में जाकर पूजा-पाठ करना आदि कर्मकांडों का भी वे विरोध करते थे। उनके अनुसार ईश्वर को पाने के लिए माला पहनकर और तिलक लगाकर इधर-उधर घूमना केवल ढोंग है। ईश्वर तो संसार के प्रत्येक कण-कण में तथा प्रत्येक मनुष्य के हृदय में वास करते हैं। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को स्वयं के भीतर झाँकना ज़रूरी है। वहीं उसे निर्गुण-निराकार ब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है।

Memory Map

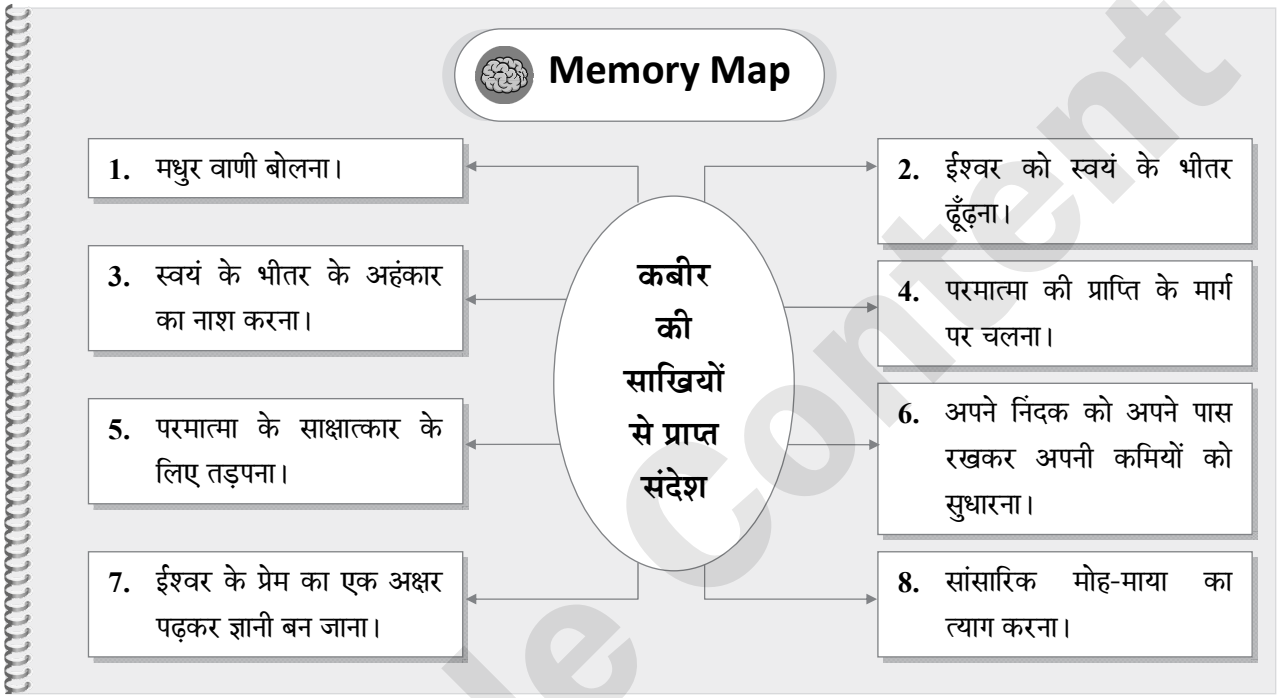

Self Assessment

[15 अंक]

1. पठित पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्पों को चुनकर लिखिए – (5 अंक)

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।।

i. हमारे अंदर अहंकार की भावना रहने पर किसकी प्राप्ति नहीं होती है? **(1)**

(1) मित्र (2) ईश्वर (3) धन (4) मोक्ष

(क) केवल (2) (ख) (2) और (3) (ग) (3) और (4) (घ) (2), (3) और (4)

ii. पद्यांश में 'मैं' का अर्थ क्या है? **(1)**

(क) स्वार्थ (ख) लालच (ग) अहंकार (घ) प्रेम

iii. 'अँधियारा' कब मिटता है? **(1)**

(क) अपने अंदर अहंकार लाने पर (ख) अपने अंदर प्रेम जगाने पर

(ग) अपने अंदर ज्ञानरूपी दीपक देखने पर (घ) अपने अंदर से स्वार्थ भावना त्यागने पर

Sample Content

iv. 'अँधियारा' किसका प्रतीक है? **(1)**

(क) अंधविश्वास (ख) अज्ञानता (ग) बुराई (घ) अहंकार

v. 'दीपक' किसका प्रतीक है? **(1)**

(क) विश्वास (ख) अच्छाई (ग) ज्ञान (घ) परोपकार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए – (4 अंक)

i. कबीर के दोहे में मृग की तुलना किससे की गई है? **(1)**

(क) परमात्मा से (ख) मनुष्य से (ग) निंदक से (घ) पंडित से

ii. पोथी पढ़-पढ़कर संसार के लोगों की हालत कैसी हो गई? **(1)**

(क) वे दुखी हो गए (ख) वे प्रसन्न हो गए (ग) वे पंडित बन गए (घ) वे मर गए

iii. कबीर के अनुसार पंडित बनने के लिए क्या करना चाहिए? **(1)**

(क) धार्मिक ग्रंथ पढ़ने चाहिए (ख) कठोर तपस्या करनी चाहिए

(ग) परमात्मा के प्रेम का एक अक्षर पढ़ना चाहिए (घ) वैराग्य धारण कर लेना चाहिए

iv. कबीर किसका घर जलाने वाले हैं? **(1)**

(क) स्वयं का (ख) साथ चलने वाले का (ग) पड़ोसियों का (घ) सभी का

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए – (6 अंक)

i. कबीर ने अपना घर क्यों जला डाला है? कबीर के दोहे के आधार पर अपना मत व्यक्त कीजिए। **(3)**

ii. कबीर के अनुसार हमारा स्वभाव किसकी सहायता से और किसके बिना निर्मल बन सकता है? कैसे? स्पष्ट कीजिए। **(3)**

निर्देश: Self Assessment के प्रश्नों के उत्तर देखने हेतु दिए गए Q. R. Code को स्कैन करें।

सूचना: कविता का भावार्थ सरलता से समझने के लिए दिए गए Q. R. Code को स्कैन करें।

Sample Content

Page no. **92** to **349** are purposely left blank. To see complete chapter buy **Target Notes**

Sample Content

1 अनुच्छेद-लेखन

'अनुच्छेद-लेखन' एक लेखन शैली है, जिसमें किसी घटना, विषय अथवा दृश्य को सीमित शब्दों में परंतु अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य शब्दों में कहें तो किसी विषय पर थोड़े शब्दों में सार्थक विचारों को स्पष्ट करना अनुच्छेद लेखन है। इसे हम निबंध का छोटा स्वरूप भी कह सकते हैं। 'अनुच्छेद' शब्द अंग्रेज़ी भाषा के paragraph शब्द का हिंदी पर्याय है।

अनुच्छेद-लेखन और निबंध-लेखन में यही अंतर है कि निबंध एक से ज्यादा परिच्छेदों में लिखा जाता है, परंतु अनुच्छेद में केवल एक ही परिच्छेद में विचारों को प्रस्तुत करना होता है। इसमें निबंध की तरह प्रस्तावना, मध्य भाग और उपसंहार जैसा विभाजन करना आवश्यक नहीं है। निष्कर्ष के तौर पर कहें तो अनुच्छेद-लेखन गागर में सागर भरने अर्थात कम शब्दों में अधिक अर्थपूर्ण बातें कहने की कला है।

अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए

- यदि प्रश्नपत्र में संकेत बिंदु/विचार बिंदु दिए हों तो उन बिंदुओं को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। उन्हीं बिंदुओं के आधार पर विषय को स्पष्ट करना चाहिए।
- शब्द-सीमा को ध्यान में रखकर अनुच्छेद लिखना चाहिए। व्यर्थ के विस्तार, एक ही बात को बार-बार दोहराना जैसी बातों से बचना चाहिए।
- अनुच्छेद में किसी एक ही पक्ष का वर्णन करना चाहिए क्योंकि हमें अनुच्छेद संक्षेप में लिखना होता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट, प्रभावशाली और प्रवाहमयी होनी चाहिए ताकि पाठक आपके अनुच्छेद से प्रभावित हो सके।
- अनुच्छेद-लेखन में उदाहरण अथवा दृष्टांत के लिए कोई जगह नहीं है। आवश्यकता होने पर उनकी ओर संकेत कर देना ही पर्याप्त है।
- वाक्यों को सरल तथा छोटा रखना चाहिए। अनुच्छेद में विषय के सभी प्रमुख बिंदुओं का समावेश होना चाहिए।
- अनुच्छेद का अंत निष्कर्ष से परिपूर्ण होना चाहिए, ताकि पाठक की जिज्ञासा पूर्ण हो सके।
- अनुच्छेद को अधिक सौंदर्यपूर्ण और कलात्मक बनाने के लिए विषय से संबंधित लोकोक्तियों या मुहावरों का प्रयोग करना चाहिए। विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का उपयोग भी किया जा सकता है।

अनुच्छेद-लेखन के प्रमुख अंग

- **शीर्षक** – शीर्षक प्रश्न के अनुसार छोटा और उचित होना चाहिए। यदि प्रश्नपत्र में शीर्षक दिया गया हो तो वही शीर्षक लिखा जाना चाहिए।
- **परिचय** – परिचय के अंतर्गत पाठक की रुचि को बनाए रखने के लिए आकर्षक और प्रभावी पंक्तियाँ लिखी जानी चाहिए।
- **विषय-वस्तु** – यह अनुच्छेद का मुख्य भाग है। इसमें मुख्य घटक जैसे कारण, भेद, गुण-दोष, प्रभाव आदि का उल्लेख करना चाहिए।
- **निष्कर्ष** – यह अनुच्छेद का अंतिम भाग है। यहाँ विद्यार्थी द्वारा अपना दृष्टिकोण, सुझाव आदि प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस पड़ाव पर पाठक की जिज्ञासा को उचित बोध दिया जाना चाहिए।

Sample Content

महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

निम्नलिखित विषयों पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए –

1. आधुनिक जीवन में मोबाइल **[CBSE 2010, 11]**

संकेत बिंदु
- आधुनिक समय में मोबाइल की महत्ता
- मोबाइल फोन द्वारा प्राप्त होनेवाली सुविधाएँ
- मोबाइल फोन से होनेवाले नुकसान

उत्तर: मोबाइल आज विश्व का सबसे लोकप्रिय साधन है। यही कारण है कि रोटी, कपड़ा और मकान के साथ-साथ संपर्क भी आदमी की बुनियादी ज़रूरत बन गया है। मोबाइल फोन जगह-जगह लगे ऊँचे टावरों की तरंगों को ग्रहण करके मनुष्य को दुनिया के कोने-कोने से जोड़े रखता है। मोबाइल की बदौलत ही आज मानवों का एक-दूसरे से संपर्क करना अत्यंत सुलभ हो गया है। मोबाइल फोन बात करने, एस.एम.एस. जैसी सुविधाओं के साथ-साथ इंटरनेट, मनोरंजन के विभिन्न साधन, गेम्स, चुटकुले, ई-मेल इत्यादि सुविधाएँ प्रदान करता है। इंटरनेट के द्वारा तो हम अपने सामने तमाम जानकारियों का भंडार पा सकते हैं। दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति के साथ वीडियो कॉल द्वारा बातें भी कर सकते है, परंतु दुर्भाग्यवश, मोबाइल के कई दोष भी हैं। मोबाइल से निकलनेवाले विकिरण तथा मोबाइल टॉवरों की तरंगें मानवीय स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती हैं। आज का मनुष्य मोबाइल का इतना उपयोग करता है कि वह अब मोबाइल का आदी हो चुका है। इस प्रकार की स्थिति में यही कहना ठीक होगा 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अर्थात किसी भी चीज के ज्यादा उपभोग से हमेशा बचना चाहिए।

2. साँच को आँच नहीं **[CBSE 2011, 16]**

संकेत बिंदु
- सत्य न बोलने का परिणाम
- सत्य बोलने का महत्त्व
- सत्य बोलने वालों के उदाहरण

उत्तर: 'साँच को आँच नहीं' से तात्पर्य यही है कि जो व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि 'सत्यं वद धर्मं चर' अर्थात सत्य बोलो और धर्म के मार्ग पर चलो। सत्य न बोलने पर व्यक्ति को झूठ का सहारा लेना पड़ता है। एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं। सत्य न बोलने पर वास्तव में हम अपनी जिह्वा का अपमान करते हैं क्योंकि सत्य जिह्वा का भूषण होता है। इतिहास गवाह है कि जब-जब असत्य सत्य पर हावी हुआ है तब-तब उसे पराजय देखनी पड़ी है। सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र हमेशा सच बोलते थे, जिनसे हम सभी सीख पाते हैं। महाभारत में राजा युधिष्ठिर भी हमेशा सत्य बोलते थे। सत्य के मार्ग पर चलते हुए महाभारत की लड़ाई में उनकी विजय हुई। भगवान राम ने दशानन रावण को हराकर साबित कर दिया था कि अंतत: सत्य ही विजयी होता है। सत्य के मार्ग पर चलकर महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। सत्य न बोलनेवाले के साथ समाज कभी खड़ा नहीं होता। असत्यभाषी पर कोई विश्वास नहीं करता। कबीरदास जी कहते हैं कि 'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप' अर्थात सच के समान कोई जप-तप नहीं है और झूठ के समान कोई पाप नहीं है।

3. विज्ञापन की बढ़ती हुई लोकप्रियता **[CBSE 2011, 16]**

संकेत बिंदु
- विज्ञापन की आवश्यकता
- विज्ञापनों से होनेवाले लाभ
- विज्ञापनों से होने वाली हानियाँ

उत्तर: आज का दौर मार्केटिंग का दौर है। किसी भी उत्पाद की मार्केटिंग में विज्ञापन अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चाहे टीवी हो, अखबार हो, दीवारें हों या धार्मिक स्थल ही क्यों न हों, हमें सभी जगह विज्ञापन देखने को मिलते हैं। ग्राहकों को किसी भी उत्पाद की विशेषताएँ, उसके उपयोग, उसके गुणधर्म बताने के लिए विज्ञापनों की आवश्यकता होती है। बड़ी-बड़ी कंपनियाँ विभिन्न संचार माध्यमों की सहायता से अपने उत्पाद का विज्ञापन करती हैं। विज्ञापनों के बहुत से लाभ हैं। विज्ञापन के क्षेत्र में कई लोगों को रोज़गार का मौका मिलता है। विज्ञापन उत्पादों की बिक्री बढ़ाने में सहायता करते हैं। फलत: हमारे देश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बनती है। सरकार अपनी विभिन्न नीतियों, योजनाओं तथा सार्वजनिक संदेशों को लोगों तक पहुँचाने के लिए विज्ञापनों का प्रयोग करती है। इन सबके बावजूद विज्ञापनों के कई नुकसान भी हैं। हानिकारक तथा अवांछित उत्पादों के विज्ञापनों से बहुत से

Sample Content

व्यक्ति उन्हें खरीदने लगते हैं, जिससे उनके जीवन पर बुरा असर पड़ता है। आज सभी कंपनियों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए होड़-सी लगी है। अत: विज्ञापनों में कंपनियाँ अपने उत्पादों की मात्र विशेषताएँ ही बताती हैं, उनके नुकसान नहीं। इसका खामियाज़ा आगे चलकर ग्राहकों को भुगतना पड़ता है। अत: यह महत्त्वपूर्ण है कि विज्ञापनों का उचित उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि जो कुछ भी हो सबसे ज्यादा प्रभाव ग्राहकों पर ही पड़ेगा।

4. बेचारा बचपन **[CBSE 2012]**

विचार बिंदु • सिमटते परिवार • बच्चों का एकाकीपन • माता-पिता की व्यस्तता

उत्तर: बचपन हमारे जीवन का सबसे सुनहरा समय होता है। बचपन वह समय होता है जब माँ-बाप और परिवार बच्चों को संस्कारित करते हैं, ताकि आगे चलकर बच्चे अच्छे इंसान बन सकें। पहले के समय में संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रचलन था। इससे बच्चे को प्रेम और विकास का वातावरण मिलता था, परंतु आज परिवार सिमटते जा रहे हैं। इसका कारण एकल परिवार व्यवस्था का बढ़ता प्रचलन है। आज माता-पिता दोनों ही पैसे कमाने में इतने मशगूल हो गए हैं कि वे बच्चों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दे पाते। इस वजह से बच्चों में एकाकीपन बढ़ता ही जा रहा है। आज यह समय की माँग है कि माता-पिता दोनों ही धन कमाएँ। इसका अर्थ यह नहीं कि बच्चों पर ध्यान न दिया जाए। बच्चों पर ध्यान न रखने पर उनका भविष्य खतरे में पड़ सकता है। इसीलिए माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों से अपनत्व का बंधन न तोड़ें।

5. बढ़ते अपराध **[CBSE 2012]**

विचार बिंदु
- भारत में अपराधों का बढ़ना
- संस्कारों का अभाव
- नौकरी का न होना
- न्याय का न मिलना
- कारण-फिल्में, चकाचौंध भरी जिंदगी का आकर्षण
- माता-पिता तथा गुरुजनों की भूमिका
- सुरक्षा उपायों की कमी

उत्तर: आज यदि हम अखबार खोलें या टीवी देखें तो हर जगह चोरी, हत्या, डकैती आदि अपराधों की खबरें देखने को मिलती हैं। भारत में अपराधों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। कई बार तो हम अपराध की विचित्र खबरों को देखकर चौंक जाते हैं। अपराध बढ़ने का मुख्य कारण है, फिल्मी दुनिया और चकाचौंध भरी जिंदगी की लालसा। हर व्यक्ति विलासितापूर्ण जीवन जीना चाहता है। यही कारण है कि बहुत से व्यक्ति इस सपने को पूरा करने के लिए गुनाह करने से भी नहीं कतराते। नौकरी न होने कारण कई बार व्यक्ति चोरी और डकैती जैसे अपराध कर बैठता है। व्यक्ति के संस्कार ही उसे अपराधी बनने से रोक सकते हैं। यदि माता-पिता और गुरु बच्चों में संस्कार के बीज बोएँगे तो निश्चय ही वह बच्चा आगे चलकर नैतिकता से परिपूर्ण होगा। वह कोई भी अपराध करने से पहले हज़ार बार सोचेगा। वहीं बढ़ते अपराध का एक और कारण सुरक्षा उपायों की कमी है। असुरक्षित समाज में अपराधों का ताँता लगा ही रहता है। कई बार उचित न्याय न मिलने के कारण व्यक्ति बदले की भावना रखकर अपराध का मार्ग चुन लेता है। इससे एक सज्जन भी अपराधी बन जाता है। यदि हम समाज व देश का विकास देखना चाहते हैं तो इन सब पहलुओं को ध्यान में रखकर अपराध को कम करने का प्रयास करना चाहिए। अपराध मानवता के लिए एक खतरा है।

6. भारत में बाल-मजदूरी की समस्या **[CBSE 2013]**

संकेत बिंदु • बाल मजदूरी का अर्थ • बाल मजदूरी के कारण • बाल मजदूरी को दूर करने के उपाय

उत्तर: यदि अठारह वर्ष से कम उम्र का बालक कोई भी नौकरी या कठिन काम करता है, तो वह बाल-मज़दूरी मानी जाती है। बाल-मज़दूरी भारत में एक बड़ी समस्या है। आज़ादी के बाद भारत में भ्रष्टाचार और महँगाई में बहुत वृद्धि हुई। इसका सबसे ज़्यादा प्रभाव बच्चों पर पड़ा। इसीलिए किसी ने सच ही कहा है- 'महँगाई ने यों करी, हर गरीब की लूट, नन्हा हुआ मज़दूर अब, गई पढ़ाई छूट।' महँगाई की मार के आगे विवश होकर माता-पिता को बच्चों की पढ़ाई छुड़वानी पड़ती है और बच्चों को काम पर भेजना पड़ता है। बच्चे को बाल-मजदूरी करने के लिए बाध्य करनेवाला हर एक इंसान कानूनन दंड का भागी है। बाल-मज़दूरी दूर करने के उपायों के रूप में पहला उपाय यह होना चाहिए कि बच्चों के माता-पिता को बाल-मज़दूरी के प्रति जागरूक किया जाए ताकि वे अपने बच्चों को पढ़ने-लिखने की उम्र में काम पर न भेजें। बाल-मज़दूरी से पीड़ित बच्चों को विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं (एन. जी. ओ.) के पास भेजना चाहिए। सरकार द्वारा बाल-मज़दूरी को लेकर सख़्त कानून बनाए जाने चाहिए। बच्चे देश के भविष्य हैं। यदि बच्चे बाल-मज़दूर बन जाएँगे, तो इस देश का भविष्य खतरे में पड़ जाएगा।

Sample Content

Page no. **351** to **449** are purposely left blank. To

see complete chapter buy **Target Notes**

Sample Content

लेखन पर आधारित Worksheet

निर्देशानुसार लेखन पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – **[54 अंक]**

1. निम्नलिखित विषय पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए – **(5)**

   जल-प्रदूषण : एक गंभीर समस्या

   - जल ही जीवन है
   - जल प्रदूषण क्या है?
   - जल प्रदूषण के कारण
   - जल-प्रदूषण के परिणाम

2. निम्नलिखित विषय पर संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए – **(5)**

   चंद्रयान-3 : भारत की अद्‌वितीय सफलता

   - सफल सॉफ्ट लैंडिंग
   - भारतीयों का जोश
   - चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव

3. आप सुरेश/सुरेश्वरी भट्टाचार्य हैं। पानी का नया कनेक्शन लगवाने के लिए दिल्ली जल विभाग के मुख्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए। **(5)**

4. आप मिथिलेश/मैथिली गुप्ता हैं। आपका पर्स गंगा विहार के प्रगति बाज़ार में खो गया था। आपने प्रगति बाज़ार पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। दो दिनों बाद आपको अपना पर्स पुलिस ने खोजकर दे दिया। पुलिस ने आपको बताया कि एक आदमी ने वह पर्स लौटाया है। इस पर संबंधित पुलिसकर्मियों व उस व्यक्ति की प्रशंसा करते हुए किसी समाचारपत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए। **(5)**

5. विद्‌यालय परिसर में आपको एक घड़ी मिली है। घड़ी के बारे में बताते हुए विद्‌यार्थियों को सूचित करने हेतु एक सूचना तैयार कीजिए। **(4)**

6. विद्‌यालय द्‌वारा प्रकाशित की जानेवाली पत्रिका के लिए विद्‌यार्थियों की रचनाएँ आमंत्रित करते हुए लगभग 60 शब्दों में एक सूचना लिखिए। **(4)**

7. किसी एन.जी.ओ.द्‌वारा लोगों में वृक्षारोपण और मृदा संरक्षण की चेतना जगाने हेतु चलाए गए अभियान के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 60 शब्दों में तैयार कीजिए। **(3)**

8. किसी कार कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 60 शब्दों में तैयार कीजिए। **(3)**

9. 'माँ की सीख' शीर्षक पर 100 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए। **(5)**

10. एक समय की बात है। एक तालाब में एक बड़ा मोटा मेंढक रहता था। उसे यही लगता था कि इस दुनिया में उससे बड़ा और कोई नहीं ..... इस विषय पर 100 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए। **(5)**

11. आप उमेश/उमा ओझा हैं। आपकी सोसायटी का मुख्य सीवर फूट गया है। अत: सीवर की मरम्मत करने की आवश्यकता है। सोसायटी के सचिव को इस विषय पर ई-मेल लिखिए। **(5)**

12. आप मोहन/मोहिनी शर्मा हैं। आपके शहर में विभिन्न खाद्‌यपदार्थों में मिलावट करने का धंधा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अपने राज्य के खाद्‌य प्रसंस्करण मंत्री को ई-मेल लिखकर उनका ध्यान इस समस्या के प्रति आकर्षित कीजिए। **(5)**

निर्देश: लेखन पर आधारित Worksheet के प्रश्नों के उत्तर देखने के लिए विद्‌यार्थी दिए गए Q. R. Code को स्कैन करें।

Sample Content

AVAILABLE BOOKS FOR CLASS X :

CBSE PERFECT PREP

- English Language and Literature
- हिंदी 'ब' स्पर्श व संचयन भाग - २
- मराठी
- Social Science
- Science
- Mathematics (Part - I)
- Mathematics (Part - II)

NCERT TEXTBOOK & EXEMPLAR

- Science
- Mathematics

ADDITIONAL TITLES

- Competency Based Questions Science
- Competency Based Questions Mathematics
- CBSE English Grammar & Writing Skills

Scan the QR code to buy e-book version of Target's Notes on Quill - The Padhai App

Visit Our Website

Target Publications® Pvt. Ltd.
Transforming lives through learning.

Address:
B2, 9th Floor, Ashar, Road No. 16/Z,
Wagle Industrial Estate, Thane (W)- 400604

Tel: 88799 39712 / 13 / 14 / 15
Website: www.targetpublications.org
Email: mail@targetpublications.org

Explore our range of **STATIONERY**